दीपावली विशेष

हरिभूमि

छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ

समाचार ही नहीं, विचार भी

धर्म, परंपराएं और मर्यादाएं कभी धुंधली नहीं होतीं। सत्य का भाव सनातन है, युग बदल सकते हैं पर सत्य की चेतना नहीं बदलती। दीपावली आज भी राम की स्मृति और मानस की गूंज के बिना अधूरी मानी जाती है। दीपावली का उजाला मर्यादा पुरुषोत्तम राम की महिमा से होता है। श्रीराम की स्मृति से जगमगाता है, जिनकी कथा तुलसीदास ने रामचरितमानस में गढ़ी। डिजिटल युग ने भले किताबों को स्क्रीन में बदला हो, पर राम की महिमा और मानस का आकर्षण पहले से कहीं अधिक फैल रहा है। हर साल रामचरितमानस की लाखों प्रतियां छपती हैं, दीप जलाने से पहले मानस पाठ की परंपरा गांवों से लेकर महानगरों तक जीवित है, मानो राम की कथा आज भी दीपावली की लौ के साथ नया विस्तार पा रही हो। दीपावली का यह अंक रामचरित मानस की अमर यात्रा के नाम। रामचरित मानस की ऐसी कहानियां और परंपराएं जो जताती हैं कि वक्त बदल सकता है लेकिन वक्त सत्य के भाव को नहीं बदल सकता।

रामचरितमानस की अमर यात्रा

- अब तक प्रकाशित प्रतियां 4 करोड़ से ज्यादा, हर साल छपती हैं 12–15 लाख प्रतियां
- यूरोप, अमेरिका, खाड़ी देश, पाकिस्तान, बांग्लादेश, म्यांमार और इंडोनेशिया समेत दर्जनभर देशों में आपूर्ति
- छपाई से पहले होती है: 15 मिनट की आरती, जूते पहनकर प्रवेश निषिद्ध
- मानस को जमीन पर नहीं रखते, रैक पर विराजते हैं

राम की महिमा...

हर साल 12 लाख से अधिक प्रतियों की मांग, अब तक 4 करोड़ प्रतिया छापीं

15 भाषाओं में प्रकाशित होती है रामचरित मानस, मुस्लिम देशों से भी आती है मांग, रिसर्च भी

रामचरित मानस की इतनी मांग, गीता प्रेस छाप नहीं पा रहा, मशीनें पड़ रही कम

गोरखपुर से हरिभूमि के लिए सुभाष गुप्ता

"राम कथा कलि बिधि बिधिसमाना।
सुनत श्रवण पाइअ अधिक बखाना॥"

तुलसीदास जी की यह पंक्तियां आज के समय को सटीक रूप से अभिव्यक्त करती है। कलयुग में रामकथा ही विधि (धर्म) के समान मानी गई है, इसलिए इसकी महिमा समय की धारा में क्षीण नहीं होती। जब दुनिया मोबाइल स्क्रीन में सिमट रही है, तब रामचरितमानस की अमर यात्रा अनवरत जारी है। यह केवल पुस्तक नहीं, लोक-आस्था की वाणी है। इसी कारण इसकी प्रतियों की छपाई, वितरण और साधना अब भी निरंतर बढ़ रही है। हाल यह है कि राम चरित मानस की मांग के आगे मशीनें भी थक जाती हैं। गीता प्रेस, गोरखपुर के प्रबंधक लालमणि तिवारी हरिभूमि से कहते हैं, हमने अब चार करोड़ से ज्यादा प्रतियां रामचरितमानस की छापी हैं। हर वर्ष 12 से 15 लाख नई प्रतियां प्रकाशित होती हैं। कई बार ऐसा होता है कि मांग के आगे मशीनें थक जाती हैं। त्योहारों और धार्मिक अवसरों पर राम की कथा को लाखों लोग उसे अपने घर, आसन और हृदय में स्थान देते हैं।

15 भाषाओं में प्रकाशित होती है रामचरित मानस

श्री तिवारी बताते हैं कि रामचरितमानस को केवल हिंदी में ही नहीं बल्कि कई अन्य भाषाओं में प्रकाशित किया जा रहा है। हिंदी, संस्कृत, बंगाली, मराठी, गुजराती, अंग्रेजी, उर्दू सहित लगभग 15 भाषाओं में उपलब्ध है। यह पहल न सिर्फ भाषा की बाधाओं को तोड़ती है बल्कि विभिन्न समुदायों तक श्रीराम के संदेश को पहुंचाने में भी मदद करती है।

शोध, साधना और साहित्य तीनों एक साथ

गीता प्रेस के कर्मचारी अपने दैनिक कार्य को भी एक तपस्या मानते हैं। यहाँ सुबह और शाम नियमित रूप से आरती होती है। प्रेस के अंदर जूते पहनकर प्रवेश करना निषिद्ध है। जो कर्मचारी पुस्तक पैकिंग और वितरण विभाग में कार्यरत होते हैं, वे पुस्तकों को अत्यंत श्रद्धा के साथ रखते हैं।

छपाई से पहले पूजा-पाठ सामूहिक आरती, नंगे पैर होता है कामकाज

जमीन पर नहीं रखते रामचरित मानस

श्री तिवारी का कहना है कि रामचरित मानस हमारे और हमारे साथी कर्मचारियों के लिए केवल किताब नहीं है। वह साक्षात श्रीराम का रूप है। छपाई के बाद रामचरित मानस को जमीन पर नहीं रखा जाता। रैक बनाए गए हैं, छपाई के बाद रामचरित मानस को रैक में रखा जाता है और उसके बाद जहां भेजा जाना है वहां भेज दिया जाता है। प्रयास रहता है कि छपाई से लेकर आपूर्ति तक रामचरित मानस की पवित्रता और सम्मान बना रहे।

यूरोप ही नहीं, मुस्लिम देशों से भी मांग

भारत के अलावा गीता प्रेस की रामचरितमानस की सबसे अधिक आपूर्ति विदेशों में होती है। खासतौर पर अमेरिका, कनाडा, यूके और अन्य यूरोपीय देशों में भारतीय समुदाय के बीच इसकी मांग बहुत अधिक है। इसके अलावा पाकिस्तान, बांग्लादेश, म्यांमार और अन्य मुस्लिम देशों में भी गीता प्रेस की रामचरितमानस की आपूर्ति की जाती है। इसका उद्देश्य सिर्फ धार्मिक ग्रंथ पहुंचाना ही नहीं बल्कि श्रीराम के संदेश और भारतीय संस्कृति का प्रचार करना भी है।

दान करई कल्यान...

प्रगट चारि पद धर्म के, कलि महुं एक प्रधान।
जेन केन बिधि दीन्हें, दान करई कल्यान...

धर्म के चार चरण प्रसिद्ध हैं,सत्य, दया, तप और दान। जिनमें से कलि में एक दान रूपी चरण ही प्रधान है। जिसे किसी प्रकार से भी दिए जाने पर दान कल्याण ही करता है। जो हम देते हैं, वही हम पाते हैं। दान अर्थात देने का भाव,अर्पण करने की निष्काम भावना।

सो धन धन्य प्रथम गति जाकि, धन्य पुन्य रत मति सोइ पाकी॥
धन्य घरी सोई जब सतसंगा, धन्य जन्म द्विज भगति अभंगा॥

वह धन धन्य है जिसकी पहली गति होती है, जो दान देने में व्यय होता है। वही बुद्धि धन्य और परिपक्व है, जो पुण्य में लगी हुई है। वही घड़ी धन्य है, जब सत्संग हो और वही जन्म धन्य है, जिसमें ब्राह्मण की अखंड भक्ति हो।

'हरिभूमि' की तीन देशों इंडोनेशिया, मलेशिया व वियतनाम से स्पेशल रिपोर्ट

हमारे राम... सबके राम

सभी समुदायों, सभी पंथों और सभी देशों में बहने वाले हमारे राम...राम जीवन हैं, राम ही संसार

मधुरिमा राजपाल/भोपाल। राम एक शब्द नहीं बल्कि एक अभिव्यक्ति है, एक शक्ति है, जो कण कण में मौजूद है। राम एक विचार है जो शुद्धता और समृद्धता के प्रतीक के रुप में केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के अनेकों देशों में मयार्दा पुरुषोत्तम के रुप में पूजे जाते हैं। ऐसे ही मयार्दा पुरुषोत्तम श्री राम की सार्वभौमिकता को दर्शाता दीपावली का त्यौहार जिसमें जहां एक ओर मां लक्ष्मी का पूजन होता हैं तो वहीं दीपावली पर्व श्री राम के चौदह वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या वापस आने के उत्सव के रुप में भी मनाया जाता है। दीपावली के पावन पर्व पर 'हरिभूमि' ने विदेशों में रहने वाले राम भक्तों से चर्चा में श्री राम के प्रति उनकी आस्था और भावना को जाना। जिसमें इंडोनेशिया, मलेशिया, वियतनाम के रहने वालों ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की गाथा को न केवल अपनी भाषा, अपने शब्दों में पिरोकर बताया बल्कि ये लोग श्रीराम और उनके जीवन से जुड़े अंशों से इतने अधिक प्रभावित हुए कि भगवान राम की गाथा को नृत्य, गीत संगीत में पिरोकर रामलीला के एक अंश के रुप में विश्व भर में प्रस्तुत करते हैं।

इंडोनेशिया की प्रो.देवी यूलियांति

'सीता की खोज' नृत्य नाटिका को बहासा इंदोनेसिया में प्रस्तुत करती हैं

मैं कुछ वर्षों पहले भारत दौरे के समय इस्कॉन मंदिर, बांके बिहारी टैंपल और अयोध्या गई तो वहां मैंने लोगों में श्रीराम के प्रति अपार श्रद्धा, भक्ति देखी जिसे देख लगा कि श्रीराम को जानना होगा और फिर मैंने रामायण और गीता का अंग्रेजी अनुवाद पढ़ा, और जाना श्रीराम का जीवन, जिसमें मुझे सबसे ज्यादा सीता माता के किरदार ने प्रभावित किया, जिन्होंने अपने पति मयार्दा पुरुषोत्तम श्रीराम के लिए महलों का एशोआराम त्याग दिया और वन-वन भटकीं, और फिर मैंने रामायण में श्रीराम के किरदार पर अपनी भाषा में 'सीता की खोज' की रचना की, और इसकी प्रस्तुति 2017 से देश-विदेश में देती आ रही हूं। यह कहना है इंडोनेशिया की रहने वाली प्रो.देवी यूलियांति का, जिन्होंने 'सीता की खोज' नाम से रामलीला के एक अंश पर नृत्य नाटिका तैयार की और इसे वो इंडोनेशिया की भाषा, बहासा इंदोनेसिया में प्रस्तुत करती हैं। प्रो.देवी यूलियांति इस नाटिका को अपने सात इंडोनेशियन साथियों के साथ प्रस्तुत करती हैं और अभी तक 20 देशों में इसकी प्रस्तुति दे चुकी हैं साथ ही अपने देश में सैकड़ों बार श्रीराम को आदर्श रुप में स्थापित करती इस प्रस्तुति को दिखा चुकी हैं।

रामायण का प्रमाण 'ककविन रामायण' नामक ग्रंथ में समाहित

उन्होंने बताया कि रामायण भारत से धर्म और संस्कृति के साथ इंडोनेशिया पहुंची, इसका प्रमाण 'ककविन रामायण' नामक ग्रंथ से मिलता है, जो प्राचीन जावा भाषा में मध्य जावा स्थित मेदांग साम्राज्य (732-1006 ई.) के समय लिखा गया। इसके अतिरिक्त बाली का रामकवच भी इसका साक्ष्य है। बाद के काल में, इस कथा को पर्यटन को ध्यान में रखकर 1961 में जीपीएच जति कुसुमो ने सेंद्रातारी रामायण (रामायण नृत्य-नाट्य) के रूप में प्रस्तुत किया।

मलेशियाई रामायण मलय रूपांतर 'हिकायत सेरी राम' के माध्यम से लोकप्रिय

मलेशियन भाषा मलय में रामलीला की प्रस्तुति, दुनियाभर में मंचन

मलेशिया में हम भगवान राम को केवल एक दिव्य पुरुष ही नहीं, बल्कि धर्म, कर्तव्य और करुणा के प्रतीक के रूप में देखते हैं। इसलिए, हम भगवान राम को मूल्य निष्ठ, सत्य, त्याग और नेतृत्व के साथ साथ धर्म के रक्षक के प्रतीक के रुप में पूजते हैं। यह कहना है मलेशिया के रहने वाले कुनारत्नम वेलाउथम का। कुनारत्नम कहते हैं कि मैं 10 वर्षों से भी अधिक समय से रामलीला कर रहा हूं, श्रीराम के इसी रुप को आधार बनाकर मैंने सात लोगों का एक ग्रुप बनाया है और हमारा यह सात लोगों का ग्रुप मलेशियन भाषा मलय में रामलीला की प्रस्तुति देता आ रहा हैं, सिर्फ हमारे देश में ही नहीं बल्कि विश्व के अनेकों देशों में हम रामलीला के माध्यम से राम की सत्य की पराकाष्ठा को जन-जन तक पहुंचाने का काम करते हैं। उन्होंने कहा कि हमारे द्वारा प्रस्तुत रामलीला में कभी मैं तो कभी मेरे साथियों ने श्रीराम, लक्ष्मण और जटायु जैसी भूमिकाएं निभाकर उनके जीवन के भावों और गहराई को समझा, जाना और उसी को अपना जीवन आधार बनाया। उन्होंने बताया कि मलेशियाई रामायण के मलय रूपांतर, 'हिकायत सेरी राम' के माध्यम से भी राम कथा लोकप्रिय है, जिसमें हमने अपने सांस्कृतिक तत्वों को शामिल किया हैं, हमारे यहां तमिल हिंदू मंदिरों में भगवान राम, सीता, लक्ष्मण और हनुमान जी की दैनिक पूजा, भजन, कीर्तन, नृत्य और रामनवमी व दिवाली जैसे वार्षिक आयोजनों में भगवान राम की गाथा बड़े ही धूमधाम से गाई जाती हैं।

मलेशिया के कुनारत्नम वेलाउथम

श्रीराम का कभी राजनीतिकरण नहीं हो सकता

उन्होंने कहा कि कई बार हमारे देश में सांप्रदायिक रुप से गलतफहमियां पैदा करने की कोशिश की जाती है, लेकिन मयार्दा पुरुषोत्तम श्रीराम का कभी राजनीतिकरण नहीं हो सकता, राम सत्य है, अटल है और शाश्वत हैं, जिनके जीवन को आधार बनाकर कई लोगों की नैया पार हुई है और मेरी व मेरे साथियों की भी क्योंकि हम श्रीराम पर आधारित नृत्य नाटिका ही प्रस्तुत नहीं करते बल्कि उससे अपने जीवन को जीने की सीख भी लेते हैं। हमारे लिए श्रीराम की गाथा को हमारी ही भाषा में प्रस्तुतिकरण करने का आशय राम के प्रति हमारी श्रद्धा को दर्शाना है। तो इस प्रकार मैं कह सकता हूं कि मलेशिया में हम लोगों के लिए भगवान राम सिर्फ़ एक देवता नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक पथ प्रकाशक हैं।

वियतनाम के सन काओ थांग

रामायण का खमेर संस्करण 'रीम केर' में हम मुखौटे से समझाते हैं श्रीराम कथा

भारत से आया रामायण का खमेर संस्करण 'रीम केर' में श्रीराम की कथा को आधार बनाकर उस पर मुखौटा नृत्य प्रस्तुत किया जाता है। मुखौटा नृत्य करने का उद्देश्य श्रीराम की गाथा को केवल हमारी वियतनामी भाषा में ही प्रस्तुत करना नहीं बल्कि राम को आधार बनाकर उन्हें अपनी भाव-भंगिमाओं और नृत्य के अविरल प्रवाह के रुप में कथा रुप में प्रस्तुत करना है। मैं और मेरी टीम इस कथा को आधार बनाकर रीम केर की प्रस्तुति करीब 10 सालों से अधिक समय से देती आ रही हैं और साल दर साल राम के प्रति हमारी आस्था गहरी होती जा रही है। यह कहना है वियतनाम के कलाकार सन काओ थांग का। थाच होआंग ताई, सन किम हा, सन मिन्ह वु राम पर आधारित अपनी प्रस्तुति केवल अपने देश वियतनाम में ही नहीं बल्कि दुनियाभर में दे चुके हैं।

राम कथा को एक भाषा-एक देश में नहीं बांधा जा सकता है

उन्होंने बताया कि रोबाम एक प्राचीन पारंपरिक मुखौटा-नृत्य-नाटक है, जो न केवल एक अनूठी प्रदर्शन कला है बल्कि गहरा ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व रखने वाली अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर भी है, जिसमें हम राम कथा को प्रदर्शित करते हैं। क्योंकि, श्रीराम केवल ईश्वरीय शक्ति का ही प्रतीक नहीं है बल्कि बुराई पर अच्छाई के प्रतीक के रुप में उन्हें पूजा जाता है और बुराई तो हर जगह व्याप्त है इसलिए राम कथा को केवल भारत तक ही सीमित नहीं किया जा सकता। एक प्रकार से राम को किसी एक देश या भाषा में सीमित करके नहीं रखा जा सकता।

धर्म और परंपरा से जुड़ी इन चौपाइयों को पढ़ने से बढ़ रहा मनोबल

दैहिक, दैविक भौतिक तापा, राम राज नहिं काहुहि ब्यापा
सब नर करहिं परस्पर प्रीती, चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती...

राम-राज यानी आदर्श शासन। त्रेता युग में श्रीराम का शासन इसकी मिसाल रहा। प्रेम, करुणा, सद्भाव के साथ न्याय का राज चला। युग बदले और राजकाज का तौर तरीका भी बदलते गया। कालखंड के चौथे भाग कलयुग में राम राज की कल्पना मुश्किल लगती है, लेकिन देश में ऐसे दर्जनों गांव हैं, जहां आज भी राम-राज जैसे हालात हैं। छग में एक गांव तो ऐसा है, जहां 100 बरस से कोई अपराध नहीं हुआ, यह महज बानगी है। मदिरा सेवन से परहेज, रोजाना रामधुन, अपराध से विमुख ऐसे गांवों को हरिभूमि ने इस बार टटोला। ग्रामीणों से बात की और सिस्टम को समझा।

जिस बालक ने दुनिया को कभी देखा नहीं, वह अपनी उंगलियों से श्री राम की महिमा को महसूस करता है और रामचरितमानस के दोहे गाता है। आंखें भले बेनूर हों, पर सुरों में ऐसा नूर है कि सुनने वाले ठिठककर श्रद्धा से भीग उठते हैं। डिजिटल युग की चमक-दमक के बीच ऐसे स्वर याद दिलाते हैं कि राम की गाथा आंखों से नहीं, आस्था की रोशनी से देखी और गाई जाती है।

आंखों में अंधेरा, मन में उजाला, नेत्रहीन की जुबां पर रामचरित मानस के दोहे

विकास चौबे ⏭ बिलासपुर

नेत्रहीन और दृष्टिबाधित उंगलियों के सहारे रामायण के दोहे और चौपाई को अपने अंदाज में गा रहे हैं और अपनी आस्था भी प्रकट कर रहे हैं। खास बात यह कि पहली से बारहवीं तक के बच्चों के लिए ब्रेल प्रेस में पाठ्य पुस्तकों की छपाई भी की गई है। देखा जाए तो वर्तमान दौर में रामचरित मानस या रामायण को नियमित तौर पर पढ़ना सहज नहीं माना जाता। जिंदगी की इस भागदौड़ में भी नेत्रहीन बालक डुमेश्वर पुरी और किशोर केंवट रामचरित मानस की चौपाइंयों का रोजाना पाठ ब्रेल लिपि में करते हैं। इन छात्रों के मुताबिक धर्म और परंपरा से जुड़ी इन चौपाइंयों को पढ़ने से मनोबल मिलता है जो रोजाना की दिनचर्या में काम आता है। डुमेश्वर पुरी तो रामायण मंडलियों में गाते भी हैं। इनका गौरेला पेण्ड्रा मरवाही से लेकर बिलासपुर तक में एक ग्रुप भी है।

किताबों के साथ सुर और साज की भी शिक्षा ली

डुमेश्वर बताते हैं कि उनके पिता धनीराम धुरी भी किसान हैं और काफी धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। उन्हें देखकर उनका भी मन रामायण पाठ में लग गया और मंडलियों में गाने लगे। स्कूल में भी ब्रेल लिपि के सहारे रामचरित मानस और रामायण कि किताबों को पढते हैं। पढ़ाई के साथ संगीत में भी रुचि थी। यही वजह थी कि उन्होंने किताबों के साथ सुर और साज की भी शिक्षा ली। डुमेश्वर पुरी के मुताबिक यू ट्यूब और आडियो के सहारे भी रामचरित मानस की चौपाइंयों का पाठ करते हैं। डुमेश्वर पुरी प्रशासनिक सेवा में जाना चाहते हैं इसके लिए उन्होंने अभी से तैयारी शुरू कर दी है।

रामायण और श्रीमद्भगवत गीता ब्रेल लिपि में लिपिबद्ध

नेत्रहीनों और दृष्टिबाधितों के लिए ब्रेल लिपि वरदान साबित हो रही है। समाज कल्याण विभाग के अंतर्गत संचालित तिफरा स्थित ब्रेल प्रेस में विशेषज्ञों के जरिए रामायण और श्रीमद्भगवत गीता को ब्रेल लिपि में लिपिबद्ध किया गया है। इसके अलावा हनुमान चालीसा सहित धार्मिक ग्रंथों को भी इस तकनीक से प्रिंट किया गया है। खास बात यह कि पहली से बारहवीं तक के बच्चों के लिए ब्रेल प्रेस में पाठ्य पुस्तकों की छपाई भी की गई है। शिक्षक संजय खुराना के मुताबिक इस स्कूल में पंचतत्र की कहानियां, जातक कहानियां, सचमुच जल ही जीवन है, हितोपदेश जैसे शिक्षाप्रद कहानी की किताबों का प्रकाशन किया जा रहा है। इसके अलावा व्याकरण और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए किताबों का प्रकाशन हो रहा है। हनुमान चालीसा, चालीसा संग्रह, आरती संग्रह, रामचरितमानस (रामायण), सुंदरकांड, भागवत गीता, प्रेम सागर (श्री कृष्ण प्रेमलीला), रामरक्षा स्त्रोतम, विष्णु सहस्त्र नाम, दुर्गा सप्तशती।

दिल की आंखें, श्रद्धा का भाव

बेनूर आखें होने के बावजूद इन छात्रों की जिंदगी में रामायण के सुरों का नूर बिखरा हुआ है। तिफरा श्रवण बाधित स्कूल के इन छात्रों के लिए स्कूल में ही ब्रेल लिपि के किताबें और साहित्य मौजूद हैं। जहां वे इसका नियमित पाठ करते हैं। छुट्टियों में इन किताबों को वे घर ले जाते हैं और वहां भी दोहा चौपाइयों गाईं जाती हैं। गौरेला पेण्ड्रा मरवाही जिले के लालपुर गांव के रहने वाले डुमेश्वर पुरी को तीन साल की उम्र में एक बीमारी के कारण आंखो से दिखना पूरी तरह बंद हो गया। परिजन ने तिफरा श्रवण बाधित स्कूल में इनका एडमिशन कराया। 12 वीं तक की पढ़ाई इन्होंने यहीं से पूरी की और अब बिलासपुर के जेपी वर्मा कालेज में बीए प्रथम वर्ष में हैं।

शहर में धार्मिक आस्था और सामाजिक समरसता की अद्वितीय मिसाल पेश करती एक परंपरा 82 वर्ष से लगातार जीवित है। गांधी चौक स्थित श्री रामायण प्रचारक समिति भवन में हर शाम रामचरितमानस का पाठ उसी श्रद्धा और अनुशासन के साथ होता है, जैसा इसे पहली पीढ़ी ने आज़ादी से पहले शुरू किया था। खास बात यह है कि अब इस विरासत को तीसरी पीढ़ी के लोग आगे बढ़ा रहे हैं और बच्चे भी उत्साहपूर्वक इस परंपरा में शामिल हो रहे हैं।

आज़ादी से पहले शुरू हुई परंपरा अनुशासन के साथ अब तक जारी

82 साल से गूंज रहा मानस पाठ तीसरी पीढ़ी ने संभाला दायित्व

संतोष दुबे ⏭ राजनांदगांव

ब्राह्मणपारा से गांधी चौक तक की यात्रा करीब आठ दशक पहले ब्राह्मणपारा के कुछ बुजुर्गों ने 'सबके कल्याण' और 'सामाजिक जागरूकता' के उद्देश्य से सामूहिक मानस पाठ की शुरुआत की थी। कच्चे मकान में आरंभ हुई यह परंपरा अब गांधी चौक स्थित समिति के पक्के भवन में नियमित रूप से संचालित हो रही है। उस दौर में हर वर्ग और जाति के लोग इस अनुष्ठान का हिस्सा बनते थे, और वही समावेशी भाव आज भी कायम है। रोज शाम गूंजते हैं चौपाई और दोहे शाम ढलते ही भवन में भक्तिमय माहौल निर्मित हो जाता है। दर्जनों लोग एकत्र होकर सामूहिक रूप से मानस पाठ करते हैं। आसपास का इलाका भगवान श्रीराम के नाम और भक्ति रस से सराबोर हो उठता है। समिति के सदस्यों का कहना है कि इस पाठ ने न सिर्फ आध्यात्मिक ऊर्जा दी है, बल्कि सामाजिक समरसता का भाव भी मजबूत किया है। बच्चों की बढ़ रही भागीदारी तीसरी पीढ़ी ने इस परंपरा को नए जोश के साथ संभाला है। बुजुर्गों के बाद अब युवा और बच्चे भी प्रतिदिन समय निकालकर पाठ में शामिल हो रहे हैं। अभिभावक इसे सांस्कृतिक शिक्षा की तरह नई पीढ़ी तक पहुंचा रहे हैं।

ग्राम कोलियारी (जिला धमतरी) के कमल नारायण साहू पिछले 30 वर्षों से श्रीरामचरितमानस की टीका और व्याख्या कर लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान दे रहे हैं। मंचों, सत्संगों और धार्मिक आयोजनों में वे दोहा-चौपाइयों की ऐसी भावपूर्ण व्याख्या करते हैं कि हर आयु वर्ग का श्रोता प्रभु श्रीराम के आदर्शों से सहज जुड़ जाता है। खास बात यह है कि रामचरितमानस उन्हें कंठस्थ है और वे किसी भी प्रसंग की व्याख्या बिना ग्रंथ देखे कर देते हैं।

यशवंत साहू ⏭ धमतरी

बचपन से लगा अध्यात्म का संस्कार कमल नारायण साहू बताते हैं कि बचपन में स्कूल से लौटने के बाद वे आसपास के गांवों में होने वाले भागवत, रामायण और धार्मिक कार्यक्रमों में श्रोता के रूप में शामिल होते थे। माता-पिता भी धार्मिक प्रवृत्ति के थे, जिसका असर उनके स्वभाव और रुचि पर पड़ा। प्रातःकालीन प्रार्थनाओं में उनकी नियमित उपस्थिति रहती थी। बुजुर्गों ने बढ़ाया हौसला बारहवीं कक्षा के बाद गांव के बुजुर्गों के प्रोत्साहन से उन्होंने रामचरितमानस की टीका शुरू की। शुरुआती दौर में भाषा और प्रस्तुति को लेकर झिझक जरूर थी, लेकिन वरिष्ठों के मार्गदर्शन और सतत अभ्यास ने उन्हें निपुण बना दिया। अयोध्या से आए संत श्रीराम वैष्णव साहेब की प्रवचन शैली ने उन्हें गहराई से प्रेरित किया और तभी उन्होंने यह संकल्प लिया कि वे भी इसी तरह रामकथा को जन-जन तक पहुंचाएंगे।

हनुमान जी सबसे बड़े प्रेरणास्रोत कमल साहू के अनुसार, रामायण का सबसे प्रेरक पात्र हनुमान जी हैं, जिनसे सेवा, शक्ति, विनम्रता और समर्पण जैसे गुण सीखने मिलते हैं। भरत और लक्ष्मण के जीवन आदर्श भी उन्हें प्रभावित करते हैं। उनकी प्रिय चौपाई है -"प्रवेस नगर कीजै सब काजा। हृदयँ रखि कौशलपुर राजा॥" जिसे वे नेतृत्व और कर्तव्यनिष्ठा का प्रतीक मानते हैं।

तीन दशक से रामचरित मानस के कंठस्थ व्याख्याकार हैं कमल साहू

कवर्धा के बूढ़ा महादेव मंदिर में 1994 से लगातार हो रहा राम नाम का जाप
200 वर्ष प्राचीन है यह मंदिर, राजा उजियार सिंह ने करवाया था निर्माण

महादेव को प्रिय हैं राम... इसलिए यहां 24 घंटे 'सिया संग राम' नाम जाप

रुचि वर्मा ⏭ रायपुर

एक पौराणिक कथा है। एक बार माता पार्वती ने शिव से पूछा था कि वे किसका ध्यान करते हैं? तब शिव ने कहा था- राम का। देवों के देव महादेव को भी राम प्रिय हैं, यही वजह है कि कवर्धा के बूढ़ा महादेव मंदिर में 24 घंटे राम नाम का जाप होता रहता है। इसमें भी खास बात यह है कि यहां राम नाम का जाप सीता के साथ होता है। आठों पहर यहां लोग राम धुन लगाए रहते हैं। कवर्धा के संकरी नदी किनारे स्थित यह शिव मंदिर पंचमुखी है। यहां पांच शिवलिंग है। पांचों शिवलिंग पंचमुखी हैं। यदि पांचों शिवलिंग के मुखों को जोड़ा जाए तो 25 मुख के साथ भोलेनाथ अपने भक्तों को दर्शन देते हैं। भक्त और प्राचीन मंदिर होने के कारण यहां भजन संध्या का आयोजन नियमित रूप से होता ही था। अधिकतर मंडलियां राम भजन का ही गायन करती थी। वर्ष 1994 की बात है। भक्तों को ख्याल आया कि राम नाम का जाप यहां निरंतर होना चाहिए। इस राम संकीर्तण के प्रणेता तत्कालीन पंडित अर्जुन सिंह हैं। इसके बाद भक्तों ने ही पहल की और तय हुआ कि यहां 24 घंटे सीता संग राम नाम का जाप होगा। मंदिर के गर्भगृह से कुछ दूरी पर एक विशेष स्थान आरक्षित किया गया है, जहां लोग राम नाम का जाप करते हैं। सर्दी, बरसात या गर्मी किसी भी मौसम में मंत्र जाप यहां नहीं रुकता है। यहां तक कोरोना काल में भी यहां जाप होता रहा।

जाप करने होती है बुकिंग, बाहर से आते हैं लोग

मंदिर प्रबंधन के सदस्य और समय-समय पर यहां राम धुनि लगाने वाले पं.पंकज शर्मा बताते हैं, प्रातः और संध्याकाल में राम नाम जाप करने वालों की संख्या अधिक होती है, जबकि दोपहर और मध्यरात्रि पश्चात यह संख्या अपेक्षाकृत कम होती है। कब, कौन जाप करेगा, इसके लिए लोग पहले से अपना नाम लिखवाते हैं। इस तरह से आठों पहर जाप की परंपरा चलते रहती है। किसी भक्त ने पहले से अपना नाम दर्ज नहीं करवाया है तो वह भी जाप कर रहे लोगों के साथ शामिल हो सकता है। बाहर से आने वाले भक्त भी यहां जाप करते हैं।

ऐसा है इतिहास

कहा जाता है कि यह स्वयंभू शिवलिंग है। 200 साल पहले कवर्धा रियासत के राजा उजियार सिंह महादेव के भक्त थे। उन्हें संतान प्राप्ति नहीं हो रही थी। उन्हें एक पंडित ने सलाह दी कि स्वयंभू शिवलिंग के पीछे अपना महल बनवाएं। इसके बाद उन्होंने स्वयंभू शिवलिंग के पीछे रिक्त भूमि पर मंदिर निर्माण करवाया और उन्हें संतान प्राप्ति हुई। इसके पश्चात पे पंचमुखी बूढ़ा महादेव की आराधना करने लगे। उन्होंने स्वयंभू शिवलिंग के स्थान पर भव्य मंदिर बनवाया गया। मंदिर बनने के बाद ये शिवलिंग बूढ़ा महादेव नाम से विख्यात हुए। राज के शासनकाल में निर्मित यह मंदिर 200 वर्ष पुराना है। स्वयंभू शिवलिंग इससे भी अधिक प्राचीन है।

रामायण पाठ के लिए पांच लोगों की नियुक्ति, पहुंचते हैं दूर-दूर से श्रद्धालु

लमगांव हनुमान मंदिर में 23 वर्षों से अनवरत चल रहा अखंड रामायण पाठ

अजय नारायण पांडे, ⏭ अंबिकापुर

ग्राम पंचायत लमगांव स्थित हनुमान मंदिर में सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया की भावना से ढाई दशक पूर्व प्रारंभ अखंड रामायण का पाठ आज भी अनवरत जारी है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम और उनके सेवक हनुमान के प्रति श्रद्धालुओं की ऐसी निष्ठा कि बीच बीच में अनेक बाधाएं आई लेकिन कभी भी रामायण का पाठ प्रभावित नहीं हुआ।

वर्ष 1975 में संत त्रिवेणी दास सरगुजा भ्रमण पर पहुंचे थे। मस्ती में भ्रमण करते वे ग्राम पंचायत लमगांव पहुंचे गए। इस दौरान एक पेड़ के नीचे पत्थर धरती के नीचे से निकला, पत्थर की आकृति देख वहीं अपना आसन जमा लिए तथा प्राकृतिक रूप से हनुमान जी प्रकट होने का सन्देश देकर उनकी सेवा करने लगे। संत त्रिवेणी दास की भक्ति एवं समर्पण देख बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचने लगे। इधर प्राकृतिक रूप से प्रकट हुए हनुमान जी की आकृति बढ़ते देख श्रद्धालुओं का मेला लगने लगा। इस बीच त्रिवेणी दास से मिलने उनके शिष्य शंकर दास पहुंचे तो बाबा ने उन्हें हनुमान जी की सेवा करने का हवाला देकर रोक लिया। गुरु- शिष्य दोनों स्वयं प्रकट हनुमान जी की सेवा करने लगे। इधर श्रद्धालु मंदिर बनाने का दबाव बनाने लगे। पहले तो बाबा खुले आसमान के नीचे ही रहते थे लेकिन श्रद्धालुओं ने पास में ही कुटिया बना दी। गुरु-शिष्य उसी कुटिया में निवास करते थे। इस बीच त्रिवेणी दास अपने शिष्य शंकर दास को पूजा-आरती की जिम्मेदारी सौंप भ्रमण पर निकल गए। इधर श्रद्धालुओं ने मंदिर बनाना प्रारंभ कर दिया। पहले हनुमान मन्दिर फिर राम मंदिर और बाद में भव्य शिव मंदिर का निर्माण किया गया है। मंदिर में हर दिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते है लेकिन मंगलवार एवं शनिवार को पूजा करने भारी भीड़ उमड़ती है। मंदिर समिति के वरिष्ठ सदस्य बसंत सिंह बताते हैं कि संत त्रिवेणी दास एवं महंत शंकर दास के प्रति क्षेत्रवासियों की अगाध श्रद्धा है।

2002 से चल रहा रामायण पाठ

वर्ष 2002 में मंदिर के महंत शंकर दास अनंत समाधि में लीन हो गए। श्रद्धालुओं ने मंदिर परिसर में ही उनकी समाधि बनवाई। इस दौरान सूरजपुर जिलान्तर्गत सारासोर शिव मंदिर में दो वर्ष अखंड रामायण पाठ चलने की जानकारी मिली तो श्रद्धालुओं ने हनुमान मंदिर में भी महंत शंकर दास की स्मृति में अखंड रामायण पाठ प्रारंभ करने की इच्छा जताई। समिति के पदाधिकारियों की स्वीकृति के बाद दूसरे दिन ही रामायण पाठ प्रारंभ कर दिया गया। प्रारंभ में गांव के लोग भी पाठी बांधकर रामायण पाठ करते थे। रामायण पाठ में कोई व्यवधान न हो इसलिए मंदिर समिति पाठ कर्ताओं के भोजन, वस्त्र व 5 हजार रुपए मासिक का भुगतान करने लगी। रामायण पाठ के लिए समिति ने पांच ब्राह्मणों को तैनात किया है जो नियमित रामचरितमानस का पाठ करते हैं। रामायण पाठियों के अतिरिक्त भी श्रद्धालु अखंड पाठ में पहुंचते हैं लेकिन पाठ में कोई व्यवधान न हो इसके लिए पांच लोगों की स्थाई नियुक्ति की गई है।

अनवरत जल रहा अखंड दीप

मंदिर में अखंड रामायण पाठ के साथ ही 29 अप्रैल 2002 के दिन अखंड दीप की स्थापना की गई थी। जो आज भी प्रज्ज्वलित हो रहा है। अखंड दीप के लिए घी एवं बत्ती की व्यवस्था प्रारंभ से ही श्रद्धालु कर रहे हैं। मंदिर समिति प्रकल्पों के सुचारू संचालन पर नजर रखती है जबकि सारी व्यवस्था श्रद्धालु स्व प्रेरणा से करते हैं। मंदिर में हर सप्ताह भंडारे का भी आयोजन किया जाता है।

हरिभूमि

छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित

समाचार ही नहीं, विचार भी

haribhoomi.com

बिलासपुर, सोमवार 20 अक्टूबर 2025

मा. नरेन्द्र मोदी मा. विष्णुदेव साय

अखंड भारत

सरल हृदय
सबके सुख-दुख के साथी

माननीय
श्री रुपनारायण सिन्हा जी
अध्यक्ष छत्तीसगढ़ योग आयोग
को छत्तीसगढ़ शासन में
केबिनेट मंत्री दर्जा प्राप्त
होने पर
हार्दिक बधाई

श्री रुपनारायण सिन्हा जी
माननीय अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ योग आयोग
केबिनेट मंत्री दर्जा प्राप्त

विनीत - समस्त योग साधकगण (छ.ग.)

हरिभूमि
छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित
समाचार ही नहीं, विचार भी

श्रीराम की नगरी अयोध्या में दिवाली उत्सव

अयोध्या सजी, बड़ी संख्या में पहुंचे श्रद्धालु

अयोध्या में जलाए गए 26 लाख 17 हजार 215 दीपक

ड्रोन से काउंटिंग हुई, राम की पैड़ी पर लेजर लाइट शो शुरू

सीएम योगी ने राम कथा पार्क में हेलिकॉप्टर से उतरे श्रीराम, माता सीता और लक्ष्मण का किया स्वागत

राम की पैड़ी पर लेजर लाइट शो 1100 ड्रोन से विशेष शो

अयोध्या में 26 लाख दीयों का वर्ल्ड रिकॉर्ड

22 झांकियां और शोभायात्रा निकाली गई

1100 ड्रोन से राम की पैड़ी पर विशेष शो

9वें दीपोत्सव पर 2 विश्व रिकॉर्ड बने

एजेंसी ▶▶| अयोध्या

दीपोत्सव पर प्रभु राजा राम अयोध्या पहुंचे और उनके आगमन पर पूरी अयोध्या रोशनी से नहा उठी। दीपोत्सव पर अयोध्या के नाम दो विश्व कीर्तिमान दर्ज हुए। अयोध्या दीपोत्सव में इस बार दो विश्व कीर्तिमान स्थापित हुए। पहला 26,17,215 दीये जलाने का और दूसरा 2128 अर्चकों द्वारा एकसाथ मां सरयू की महाआरती का। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड की टीम इस कीर्तिमान को दर्ज करने के लिए खुद अयोध्या में मौजूद रही। ▶▶|शेष पेज 4 पर

जहां कभी गोलियां चलीं वहां दीये जल रहे : योगी

सीएम योगी आदित्यनाथ ने दीपोत्सव के मौके पर कहा कि जहां कभी गोलियां चली थीं, वहां अब दीये जल रहे हैं। उन्होंने कहा कि ये दीये 500 वर्षों के अंधकार पर विजय का प्रतीक हैं। योगी आदित्यनाथ ने अयोध्या में संतों और महंतों का अभिवादन किया। वे सरयू नदी के तट पर राम की पैड़ी पर आयोजित होने वाले दीपोत्सव में शामिल होने पहुंचे हैं।

दो रिकॉर्ड

पहला- 26 लाख 17 हजार 215 दीपक एक साथ जलाए गए

दूसरा- सरयू तट पर 2128 अर्चक सरयू की महाआरती की गई

23 करोड़ से अधिक श्रद्धालु पहुंचे

भगवान श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या पहुंचने वाले श्रद्धालुओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। इस वर्ष केवल जनवरी से जून के बीच यहां 23 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने दर्शन-पूजन किया। योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा वर्ष 2017 से शुरू किए गए दीपोत्सव ने देश-विदेश में अयोध्या का आकर्षण बढ़ा दिया है। पर्यटन विभाग के आंकड़ों के अनुसार, इस वर्ष जनवरी से जून तक अयोध्या में कुल 23,82,14,737 श्रद्धालु पहुंचे, जिनमें 23,81,64,744 भारतीय और 49,993 विदेशी श्रद्धालु शामिल हैं।

वर्ष 1954 पश्चात इस साल हंस राजयोग संग रहेगा बुधादित्य और सर्वार्थ सिद्धि का संयोग

शाम 6 बजकर 48 मिनट से होगा शिववास का मंगलकारी योग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रायपुर

दीवाली के अवसर पर इस बार हंस राजयोग, बुधादित्य राजयोग और सर्वार्थ सिद्धि योग का शुभ संयोग बना हुआ है। करीब 71 साल बाद दिवाली के अवसर पर यह ▶▶|शेष पेज 4 पर

पूजन मुहूर्त

- लक्ष्मी पूजा मुहूर्त (प्रदोष काल) – संध्या 7:08 से 8:18 बजे तक
- लक्ष्मी पूजा मुहूर्त (निशिता काल) – रात्रि 11:41 से मध्यरात्रि पश्चात 12:31 तक
- राहुकाल – सुबह 07:50 से 09:15 बजे तक रहेगा। इस मुहूर्त में कोई भी शुभ काम करने से परहेज किया जाता है।

भद्रवास सहित शिववास

दीपावली पर भद्रवास योग सुबह 8 बजकर 44 मिनट तक है। इस समय तक भद्रा स्वर्ग लोक में रहेंगी। शास्त्रों में निहित है कि भद्रा के पाताल और स्वर्ग लोक में रहने के दौरान पृथ्वी पर उपस्थित जनों का कल्याण होता है। इसके साथ ही शिववास योग का मंगलकारी संयोग भी बन रहा है। इस योग का निर्माण शाम 6 बजकर 48 मिनट से हो रहा है। इस योग में शिव-शक्ति की पूजा करने से साधक की हर मनोकामना पूरी होगी।

आदिवासी समाज दिवाली के दूसरे दिन मनाता है समृद्धि का प्रतीक सोहराई का त्यौहार

मवेशियों को नहला कर करते हैं भव्य श्रृंगार महिलाएं घर की दीवार व आंगन में उकेरती हैं कलात्मक आकृतियां

हरिभूमि न्यूज ▶▶| अंबिकापुर

आदिवासी समाज ने अब दिवाली की शहरी संस्कृति को हू बहू अपना लिया है लेकिन अपनी कलात्मकता, प्रकृति प्रेम एवं फसल कटाई के सोहराई त्योहार को अभी भी जीवंत रखा है। अब शहरों की तर्ज पर गांवों में भी दिवाली के दिन जगमग दीप सजते हैं तथा रंग बिरंगी फुलझड़ियां छूटती हैं। युवा तेज शोर वाले बम-पटाखे फोड़ते हैं लेकिन सोहराई त्योहार ▶▶|शेष पेज 4 पर

जलाते हैं अनुपयोगी सामान

दिवाली पर कहीं-कहीं घर के कोने-कोने में पुराना सूपा बजाकर दरिद्रता को भगाने एवं समृद्धि के लिए ईश्वर का आह्वान करने की परंपरा है। आदिवासी समाज सोहराई के अवसर पर अपने घर के पुराने झाड़ू, बांस की पुरानी सामग्रियों को गांव के बाहर ले जाकर जलाते हैं तथा दशा-मका जाओ का उच्चारण करते हैं। बताते हैं कि ऐसा करने से घर की नकारात्मक शक्तियां भस्मीभूत हो जाती हैं तथा घर की ऊर्जा सकारात्मकता में बदल जाती है। इस अवसर पर ग्रामीण कृषि के अपने पारंपरिक हल-जुआ को धो-पोछकर भव्य सजावट करते हैं।

आनंद का सच्चा भाव
18 कैरेट रेट (75.00%) = ₹93259/-
22 कैरेट रेट (91.60%) = ₹113900/-
24 कैरेट रेट (99.99%) = ₹124333/-
सोने का भाव* प्रति 10 ग्राम | GST Extra
*Conditions apply
ANAND Jewels
Pandri, Raipur

दीपोत्सव की शुभकामनाएं

दीपोत्सव के पावन पर्व पर सुधि पाठकों, विज्ञापनदाताओं, एजेंसियों और हॉकर बंधुओं समेत सभी शुभचिंतकों को हार्दिक शुभकामनाएं।

अवकाश

इस अवसर पर 20 ओर 21 अक्टूबर को हरिभूमि कार्यालय में अवकाश रहेगा। 23 अक्टूबर गुरुवार को आपका यह प्रिय अखबार आपके हाथों में होगा।

-प्रधान संपादक

तीन करोड़ के कफ सिरप बरामद, तीन गिरफ्तार

सोनभद्र। सोनभद्र जिले में रॉबर्ट्सगंज थाना पुलिस, विशेष अभियान समूह और आबकारी विभाग की संयुक्त टीम ने लगभग तीन करोड़ रुपए मूल्य की खांसी की प्रतिबंधित दवा बरामद कर तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

अमेरिका में 'नो किंग्स' प्रोटेस्ट इतिहास में सबसे बड़ा विरोध प्रदर्शन

ट्रंप के खिलाफ हल्ला बोल, 2700 स्थानों पर जुटे 70 लाख से अधिक प्रदर्शनकारी

एजेंसी ▶▶| वाशिंगटन

अमेरिका की सड़कों पर राष्ट्रपति ट्रंप के खिलाफ लाखों लोग सड़क पर उतर चुके हैं। यह अमेरिका के इतिहास का सबसे बड़ा विरोध प्रदर्शन है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के खिलाफ अमेरिकी की जनता सड़क पर मार्च कर रही है। इस दौरान अमेरिका के 2700 स्थानों पर 70 लाख से ज्यादा लोग ट्रंप की नीतियों, खासकर उनके ट्रांसजेंडर विरोधी बयान और अन्य विवादास्पद फैसलों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं।

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के खिलाफ लोगों में भारी गुस्सा है। इस विशाल विरोध प्रदर्शन में विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और नागरिक समूहों ने भाग लिया, जिसमें महिलाओं के अधिकारों के लिए कार्य करने वाले संगठनों से लेकर पर्यावरण कार्यकर्ता और ट्रंप प्रशासन की नीतियों के विरोधी शामिल थे। प्रदर्शनकारियों ने ट्रंप के शासनकाल की आलोचना करते हुए 'अब और नहीं' और 'हमें बदलाव चाहिए' जैसे नारे लगाए। इस विरोध प्रदर्शन का आह्वान ट्रंप के प्रशासन के खिलाफ बढ़ते असंतोष और उनके द्वारा उठाए गए निर्णयों के विरोध में किया गया था। यह विरोध प्रदर्शन ट्रंप की विभिन्न नीतियों के खिलाफ है। इसमें विशेष रूप से ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के अधिकारों के खिलाफ उठाए गए उनके कदमों और उनके कार्यकाल के दौरान किए गए अन्य विवादास्पद कार्यों ने ▶▶|शेष पेज 4 पर

- ट्रंप प्रशासन के तानाशाही रवैए के खिलाफ आवाज बुलंद

'नो किंग्स' प्रोटेस्ट क्या है?: राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के खिलाफ अमेरिका में विरोध की आग सुलग रही है। अमेरिका और दुनियाभर में 'नो किंग्स' के बैनर तले लाखों लोग सड़कों पर उतर गए है। 'नो किंग्स प्रोटेस्ट' ट्रंप प्रशासन की शिक्षा, प्रवासन और सुरक्षा नीतियों में बढ़ रही तानाशाही के खिलाफ चल रहा है। 200 से ज्यादा संगठन इस आंदोलन में कूद चुके हैं। छोटे कस्बों से लेकर बड़े-बड़े शहरों तक ट्रंप प्रशासन के तानाशाही रवैये के खिलाफ आवाज बुलंद हो रही है।

सड़कों पर आने की अपील

नो किंग्स नाम का गठबंधन ने बीते जून माह में बड़ा प्रदर्शन किया था। इस गठबंधन ने एक बार फिर लोगों से सड़कों पर उतरने की अपील की है ताकि यह संदेश दिया जा सके कि डोनाल्ड ट्रंप कोई राजा नहीं हैं। ट्रंप प्रशासन में लगातार बढ़ रहे अधिनायकवाद के खिलाफ यह प्रोटेस्ट है। अमेरिका के कई शहरों में इस आंदोलन के मद्देनजर सेना की मौजूदगी बढ़ा दी गई है। वहीं, ट्रंप प्रशासन की ओर से इस आंदोलन को कुचलने के लिए सख्त कार्रवाई की चेतावनी दी गई है।

कहां-कहां हो रहा 'नो किंग्स' प्रोटेस्ट?

पूरे अमेरिका में 2,500 से अधिक प्रोटेस्ट की योजना तैयार की गई है, जिनमें बड़े शहरों के साथ ही छोटे कस्बे भी शामिल हैं। यह प्रोटेस्ट अमेरिका के सभी 50 राज्यों में होंगे। अलग-अलग जगहों पर अलग समय पर प्रदर्शन शुरू किए जाएंगे। प्रोटेस्ट में 200 से ज्यादा संगठन में जुड़े हुए हैं। इस डे ऑफ एक्शन के लिए आयोजकों ने कई प्रमुख शहरों को 'एंकर सिटीज' के रूप में चिन्हित किया है, जिनमें शामिल वॉशिंगटन डीसी, सैन फ्रांसिस्को, अटलांटा, सैन डिएगो, होनोलूलू, कैनसस सिटी (मिसौरी), शिकागो, न्यूयॉर्क सिटी, बोस्टन, ह्यूस्टन (टेक्सास), न्यू ऑरलियन्स और बोजमैन (मोंटाना) शामिल हैं।

धमाके की आवाज

विशाल चट्टान से टकराई मालगाड़ी, इंजन के पटरी से उतरने पर रेल यातायात ठप

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जगदलपुर

अनंतगिरि घाट किरंदुल-कोत्तवालसा रेललाइन रविवार तड़के 4 बजे भोर की खामोशी को चीरती एक ज़ोरदार धमाके की आवाज़ आई। किरंदुल-कोत्तवालसा रेल लाइन के दुर्गम पहाड़ी सेक्शन में एक मालगाड़ी चलती ट्रेन अचानक विशाल चट्टान से टकरा गई। टक्कर इतनी भयावह थी कि इंजन बेपटरी हो गईं,जिससे रेललाइन पर घंटों तक अफरा-तफरी मच गई। लोकोपायलट ने अचानक पटरियों पर गिरी एक विशाल चट्टान देखी। ब्रेक लगाने का मौका तक नहीं मिला और इंजन सीधा चट्टान से जा भिड़ा। टक्कर से रेल ▶▶|शेष पेज 4 पर

आवागमन बाधित

रेल प्रशासन ने ट्रैक बहाली के लिए आपात दल और इंजीनियरिंग टीम को मौके पर भेजा है। स्थानीय लोगों ने बताया कि इस घाट सेक्शन में पहले भी कई बार चट्टानें गिरने की घटनाएं हो चुकी हैं, लेकिन इस बार हादसा बड़े पैमाने पर हुआ।

पैसेंजर ट्रेन 30 तक रहेगी रद्द

विशाखापत्तनम से किरन्दुल आने-जाने वाली पैसेंजर ट्रेन को 20 अक्टूबर को रद्द कर दिया गया। इस बात की पुष्टि विशाखापत्तनम रेल मंडल के वरिष्ठ वाणिज्य मंडल प्रबंधक ने की। इस बीच इस घटना के कारण विशाखापत्तनम-किरंदुल पैसेंजर (58501/58502) को 19 अक्टूबर को दोनों दिशाओं से रद्द करना पड़ा। ट्रेन संख्या 58502 किरंदुल-विशाखापत्तनम पैसेंजर,जो 20 अक्टूबर को किरंदुल से रद्द कर दी गई है।

चिंतन

कलयुग में भी प्रासंगिक है भगवान श्रीराम के आदर्श

भारतीय संस्कृति में दिवाली केवल दीपों और उत्सव का पर्व नहीं बल्कि सृष्टि के उस सनातन भाव का प्रतीक है, जिसमें प्रकाश अंधकार पर, श्रद्धा मोह पर और सृजन विनाश पर विजय प्राप्त करती है। इस दिन जब संपूर्ण भारत दीपों से जगमगा उठता है, तब हर घर, हर हृदय में भगवान राम के स्वागत की मंगल भावना जाग उठती है। मान्यता है कि इसी दिन भगवान राम 14 साल का वनवास पूरा करके आयोध्या लौटे थे। वो राम जिनके चरित्र की मिसाल आज भी दी जाती है और उन्हें उनके गुणों के कारण पूजनीय माना जाता है। श्रीराम ने हर परिस्थिति में सत्य और धर्म का पालन किया। उन्होंने अपने जीवन से संदेश दिया कि अगर इंसान चाहे तो वो अपने सद्कर्मों से मर्यादा पुरुषोत्तम हो सकता है। बस इसके लिए श्रीराम के आदर्शों का पालन करना अनिवार्य है। भगवान राम ने व्यक्तिगत सुख से ऊपर कर्तव्य को रखा। वनवास, सीता-हरण और युद्ध जैसी परिस्थितियों में भी उन्होंने धैर्य और विवेक बनाए रखा। जो दर्शाता है कि इंसान धैर्य, विवेक और कर्तव्य का तालमेल बनाकर चले तो किसी भी परेशानी पर विजय हासिल कर सकता है। श्रीराम में अन्दर इतने गुण थे कि एक मानव के रूप में जन्म लेने के बावजूद अपनी प्रजा के लिए वो भगवान बने रहे और आज भी अपने चरित्र के कारण पूजे जाते हैं। उनके जो आदर्श थे, वो आज के समय में भी उतने ही प्रासंगिक हैं। त्रेता युग में इंसानों की फितरत और सोच स्पष्ट थी, लेकिन अब कलियुग है। इस युग में इंसान भटका हुआ है और आधुनिकता की चकाचौंध के कारण प्राचीन विचार लोगों को तर्कहीन और मूल्यहीन लगते हैं। आधुनिक पीढ़ी की सोच गलत भी नहीं है लेकिन सामान हो या सोच, हर चीज का रूपांतरण संभव है। विचार और मूल्य कभी पुराने नहीं होते बल्कि अगर उनका आधार मजबूत हो, तो समय के साथ वो खुद को एक नए स्वरूप में ढाल लेते हैं। बस उन्हें अपनाने की सुलभता हममें होनी चाहिए। भले ही आधुनिक पीढ़ी भगवान राम के मूल्यों को प्राचीन सोचकर अपनाने से हिचके, लेकिन भगवान राम के आदर्श इतने मूल्यवान हैं कि वो आज भी प्रासंगिक हैं। उनके जीवन से कई शिक्षाएँ मिलती हैं, जो आधुनिक चुनौतियों में भी मार्गदर्शन करती हैं। आज की दौड़-भाग में सत्य और नैतिकता से समझौता करना आसान है। आज का युवा अनेक प्रलोभनों और चुनौतियों से घिरा है, इसलिए श्रीराम की सत्य और धर्मनिष्ठा युवाओं के लिए यह ईमानदारी और नैतिकता का प्रतीक है। राम का जीवन यह बताता है कि परिवार और समाज के प्रति कर्तव्य निभाना ही सच्चा धर्म है। उनकी कर्तव्यपरायणता युवाओं को कर्तव्य और जिम्मेदारी निभाने की प्रेरणा देती है। आज की पीढ़ी जहां व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आत्म-संतुष्टि की ओर झुकी हुई है, वहीं श्रीराम का आदर्श हमें संतुलन सिखाता है। जो समझाता है कि स्वतंत्र रहो, पर अपने मूल्यों और परिवार से जुड़े रहो। श्रीराम की वाणी में संयम और आचरण में शुद्धता, सीमाओं और अनुशासन का महत्व सिखाते हैं। तनाव और असुरक्षा के दौर में श्रीराम का संकट में धैर्य रखना, युवाओं को मानसिक दृढ़ता और संकट-प्रबंधन की शिक्षा देता है। आज का युवा असफलता या आलोचना से निराश हो जाता है। ऐसे में भगवान श्रीराम का जीवन प्रेरित करता है कि संकट जीवन का अंत नहीं, बल्कि आत्मबल की परीक्षा है। हम अगर धैर्य से इस परीक्षा का सामना करें तो सफलता पाना तय है। बस जरूरी इस बात कि है कि हम अपनी युवा पीढ़ी को श्रीराम के आदर्शों का न केवल ज्ञान दें बल्कि उन्हें अपनाने का भी प्रेरित करें।

कृषि योजना

प्रमोद भार्गव

दाल उत्पादन में आत्मनिर्भरता के उपाय

दो प्रमुख कृषि योजनाओं की शुरुआत की है। धन-धान्य और दलहन आत्मनिर्भरता मिशन नाम से की गई ये योजनाएं यदि खेत में खरी उतरती हैं तो किसान की माली हालत तो सुधरेगी ही देश दाल उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर भी हो जाएगा। ये योजनाएं खासतौर से पिछड़े सौ जिलों में कृषि उत्पादकता बढ़ाने और विविध फसलों की पैदावार को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से आरंभ की जा रही हैं। दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भर होने के लिए वर्ष 2030-31 तक उत्पादन को 252 लाख टन से बढ़ाकर 350 लाख टन करने का लक्ष्य तय किया है। इस हेतु 35 लाख हेक्टेयर अतिरिक्त भूमि दलहन उत्पादन के दायरे में लाई जाएगी। विडंबना देखिए, भारत दुनिया का सबसे बड़ा दलहन उत्पादन और उपभोक्ता देश है, लेकिन दालों की आपूर्ति आयात पर निर्भर हैं। हालांकि नरेंद्र मोदी के 11 साल के कार्यकाल में कृषि निर्यात दोगुना हो गया है लेकिन दालें आयात करनी पड़ती हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और नानाजी देशमुख ने जयप्रकाश नारायण की जयंती पर दो प्रमुख कृषि योजनाओं की शुरुआत की है। धन-धान्य और दलहन आत्मनिर्भरता मिशन नाम से की गई ये योजनाएं यदि खेत में खरी उतरती हैं तो किसान की माली हालत तो सुधरेगी ही देश दाल उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर भी हो जाएगा। इन योजनाओं के लिए 35,440 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। ये योजनाएं खासतौर से पिछड़े सौ जिलों में कृषि उत्पादकता बढ़ाने और विविध फसलों की पैदावार को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से आरंभ की जा रही हैं।

दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भर होने के लिए वर्ष 2030-31 तक उत्पादन को 252 लाख टन से बढ़ाकर 350 लाख टन करने का लक्ष्य तय किया है। इस हेतु 35 लाख हेक्टेयर अतिरिक्त भूमि दलहन उत्पादन के दायरे में लाई जाएगी। विडंबना देखिए, भारत दुनिया का सबसे बड़ा दलहन उत्पादन और उपभोक्ता देश है, लेकिन दालों की आपूर्ति आयात पर निर्भर हैं। हालांकि नरेंद्र मोदी के 11 साल के कार्यकाल में कृषि निर्यात दोगुना हो गया है लेकिन दालें आयात करनी पड़ती हैं।

आहार में पौष्टिक तत्वों का कारक मानी जाने वाली दालें, बढ़ते दामों के कारण गरीब की शारीरिक जरूरत पूरी नहीं कर रही हैं। ये हालात मानसून के दौरान औसत से कम या ज्यादा बारिश होने से तो उत्पन्न होते ही हैं, किसान के नकदी फसलों की ओर रुख करने के कारण भी हुए हैं। यही नहीं, यह स्थिति इसलिए भी बनी, क्योंकि कांग्रेस की मनमोहन सिंह सरकार की गलत नीतियों के चलते किसान को खाद्य वस्तुओं की बजाय, ईंधन, प्लास्टिक और फूलों की फसल उगाने के लिए, कृषि विभाग ने जागरूकता के अभियान चलाए। यही वजह रही कि भूमंडलीकरण के दौर में दालों की पैदावार लगातार कम होती चली गई। दाल उत्पादन का रकबा लगभग 15 हजार हेक्टेयर कम हो गया। भारत में दालों की सालाना खपत 220 से 230 लाख टन है। मांग और आपूर्ति के इस बड़े अंतर के चलते जमाखोरों और दाल के आयातक व्यापरियों को भी वारे-न्यारे करने का मौका मिल जाता है। पौष्टिक आहार देश के हरेक नागरिक के स्वस्थ जीवन से जुड़ा अहम प्रश्न है। संविधान के मूलभूत अधिकारों में भोजन का अधिकार शामिल है। चूंकि दालें प्रोटीन और पौष्टिकता का महत्वपूर्ण जरिया हैं। चूंकि दालें आयात करनी होती हैं, इसलिए इनके भाव भी बीच-बीच में बढ़ जाते हैं। इस कारण मध्यवर्गीय व्यक्ति की थाली से दाल गायब होने लगती है। चुनांचे दाल व्यक्ति की सेहत से जुड़ी हैं और बीमारी की हालत में तो रोगी को केवल दाल-रोटी खाने की ही सलाह चिकित्सक देते हैं। वर्ष 1951 में प्रतिव्यक्ति दालों की उपलब्धता 60 ग्राम थी,जो वर्ष 2010 में घटकर 34 ग्राम रह गई। जबकि अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार यह मात्रा 80 ग्राम होनी चाहिए। दालें भारत में प्रोटीन का प्रमुख स्त्रोत मानी जाती हैं। लेकिन स्थानीय मांग पूरी करने के लिए दाल उत्पादन में किसान को बड़ी मशक्कत करनी पड़ती है। तुअर दाल की फसल आठ माह में तैयार होती है। बावजूद किसान को उचित दाम नहीं मिलते हैं। गोया, किसान साल में एक फसल उगाने में रुचि कैसे लें? विदेशों में रहने वाले भारतीय भी सबसे ज्यादा तुअर की दाल खाना पसंद करते हैं। देश में सबसे अधिक चने और

अरहर की खेती होती है। इनके अलावा मूंग और उड़द की दालें पैदा होती हैं। देष में 10 राज्यों के किसान दालों की खेती करते हैं। इनमें सबसे अधिक उत्पादक राज्य महाराष्ट्र है। दालें मुख्य रूप से खरीफ की फसल हैं,जो वर्षा ऋतु में बोई जाती हैं। इस ऋतु में करीब 70 प्रतिशत दालों का उत्पादन होता है।

केंद्रीय उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय के अनुसार दालों के तात्कालिक भाव 85.42 प्रति किलो से लेकर 112.88 रुपये किलो तक हैं। भावों में इस उछाल का कारण जमाखोरी और सट्टेबाजी के साथ आयात का कुचक्र है। टाटा, मंहिद्रा, ईजी-डे और रिलांइस जैसी बड़ी कंपनियां जब से दाल के व्यापार से जुड़ी हैं, तब से ये जब चाहे तब मुनाफे के लिए दाल से खिलवाड़ करने लग जाती हैं। जब कंपनियां बड़ी तादाद में दालों का भंडारण कर लेती हैं,तो भावों में कृत्रिम उछाल आ जाता है। हालांकि केंद्र सरकार ने दालों का भंडारण सितंबर 2024 से सीमित किया हुआ है। इस कारण भाव नियंत्रण में हैं। मीडिया दाल के बढ़ते भावों को गरीब की थाली से जोड़कर उछालता है। तब सरकार दाल के आयात के लिए विवश हो जाती है। मसलन देशी-विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के हर हाल में पौ-बारह बने रहते हैं। इन कंपनियों का दबदबा इतना है कि कोई भी राज्य सरकार इनके गोदामों पर छापे डालने का जोखिम उठाने का साहस नहीं जुटा पाती। लिहाजा कालाबाजारी बदस्तूर रहती है। ये कंपनियां मसूर और मटर की दाल कनाडा से, उड़द और अरहर की दाल बर्मा के रंगून से, राजमा चीन से और काबुली चना आस्ट्रेलिया से आयात करती हैं। इनके अलावा अमेरिका, रूस, केन्या, तंजानिया, मोजांबिक, मलावा और तुर्की से भी दालें आयात की जाती हैं। कनाडा ने मसूर दाल के भाव पिछले साल की तुलना में दोगुने कर दिए हैं। कनाडा एशियाई देशों में सबसे ज्यादा दालों का निर्यात करने वाला देश है। इस नाते यह कहने में कोई दो राय नहीं कि विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों की बात तो छोड़िए, देशी कंपनियां भी भारतीय कृषि को बदहाल बनाए रखना चाहती हैं। आयात की जब इन्हें खुली छूट मिल जाती है तो ये जरूरत से ज्यादा दाल व तेल का आयात करके भारत को डंपिंग ग्राउंड बना देती हैं। तय है, कालांतर में भारत की तरह दूसरे देशों में यदि मौसम रूठ जाता है तो दाल और प्याज की तरह खाद्य-तेल के भाव भी आसमान छूने लग जाते हैं। सस्ते तेल का आयात जारी रहने की वजह से ही भारत में तिलहन का उत्पादन प्रभावित हो रहा है। बावजूद हमारे नेता ऐसी नीतियों को बढ़ावा देने की कोशिशों में लगे रहे हैं कि दलहन और तिलहत के क्षेत्र में भारत पूरी तरह परावलंबी बना रहे। इस परिप्रेक्ष्य में मनमोहन सरकार के कृषि मंत्री बलराम जाखड़ ने सलाह दी थी कि भारत अफ्रीका में दालें उगाए और फिर आयात करे।

इसी तरह संप्रग सरकार में कृषि मंत्री रहे शरद पवार म्यांमार और उरुग्वे में दालें पैदा करके आयात करना चाहते थे। ये सुझाव समझ से परे हैं। फसल के बाद होने वाले नुकसान को कम करने के लिए प्रमुख उत्पादन क्षेत्रों में आधुनिक गोदाम और कोल्ड स्टोरेज का नेटवर्क बनाना होगा। यह इस योजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। दाल से बेसन, पापड़, नमकीन और अन्य उत्पाद बनाने के लिए स्थानीय प्रसंस्करण को बढ़ावा देने से किसानों की आय में और वृद्धि होगी। आखिर ऐसे क्या रहस्य हैं कि हमारे नीति-नियंता विदेशी धरती पर तो दाल उत्पादन को प्रोत्साहित करना चाहते हैं, किंतु देश के किसानों को लाभकारी मूल्य देना नहीं चाहते? ऐसी मंशाएं देश की खाद्य सुरक्षा को जान-बूझकर संकट में डालने जैसी लगती हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस नाते 100 पिछड़े जिलों में दालों के उत्पादन का दायरा बढ़ाकर आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की है।

(लेखक वरिष्ठ साहित्यकार और पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)
लेख पर अपनी प्रतिक्रिया haribhoomi@gmail.com पर दे सकते हैं।

दो प्रमुख कृषि योजनाओं की शुरुआत की है। धन-धान्य और दलहन आत्मनिर्भरता मिशन नाम से की गई ये योजनाएं यदि खेत में खरी उतरती हैं तो किसान की माली हालत तो सुधरेगी ही देश दाल उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर भी हो जाएगा। ये योजनाएं खासतौर से पिछड़े सौ जिलों में कृषि उत्पादकता बढ़ाने और विविध फसलों की पैदावार को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से आरंभ की जा रही हैं। दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भर होने के लिए वर्ष 2030-31 तक उत्पादन को बढ़ाकर 350 लाख टन करने का लक्ष्य तय किया है। पीएम मोदी ने इस नाते 100 पिछड़े जिलों में दालों के उत्पादन का दायरा बढ़ाकर आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की है।

क्रियायोगः अधिक विकसित होगी नई पीढ़ी

संकलित

दर्शन

सभी मनुष्य वस्तुतः आत्माएं ही हैं। आपके लिए मात्र जन्म के आधार पर ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचना उचित नहीं है। जिन्हें हम 'नौजवान व्यक्ति' कहते हैं, वे पुरानी आत्माएं हैं और वे प्रत्येक मनुष्य में अंतर्जात कामनाओं-सुख, सुरक्षा, प्रेम इत्यादि कामनाओं को पूर्ण करने के लिए हर प्रकार के प्रयासों और आकांक्षाओं से गुजर चुकी हैं। उन्होंने उस (पूर्ति) को प्राप्त करने के प्रयास में अनेक जन्म व्यतीत किए हैं और अंततः वे यहां आए हैं तथा जिन लोगों ने जन्म लिया है, उनमें से लाखों लोग अपने पूर्वजन्मों से विकास के उस चरण में हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण इस विषय पर प्रकाश डालते हैं। वे अर्जुन से कहते हैं, 'यदि अंतिम लक्ष्य को प्राप्त किए बिना तुम्हारे इस जीवन का अंत हो जाता है तो चिंता मत करो, क्योंकि योग-ध्यान का कोई भी प्रयास व्यर्थ नहीं होता है।' तत्पश्चात उस भक्त का एक ऐसे वातावरण में पुनर्जन्म होता है, जहां वह पुनः अपनी आगे की यात्रा प्रारंभ करता है। इसलिए जिन्हें आप 'नौजवान व्यक्ति' कह रहे हैं, वे ज्ञानीजन हैं। वे संभवतः ऐसे युद्धरत आत्माएं हैं, जो हर प्रकार के अनुभव से गुजर चुके हैं और जिनकी चेतना इस प्रकार की है कि उन्होंने विभिन्न परिस्थितियों में हर तरह के कार्य किए हैं। वे पुनः लौटकर आते हैं और कहते हैं, 'अब मैं अपना और अधिक समय व्यर्थ नहीं गवाऊंगा। मैं अपने और अधिक जन्मों को व्यर्थ नहीं गवाऊंगा। मैं वह कार्य करूंगा, जो वास्तव में मेरे आत्मा की क्षमताओं और मेरे आत्मा में विद्यमान उस दिव्य संपर्क की तृष्णा की पूर्ति करेगा।'

एक लकड़ी का कटोरा

संकलित

प्रेरणा

एक वृद्ध व्यक्ति अपने बहु-बेटे के यहां शहर रहने गया। वो एक छोटे से घर में रहते थे, पूरा परिवार और उसका चार वर्षीया पोता एक साथ ही खाना खाते थे। लेकिन वृद्ध होने के कारण उस व्यक्ति को खाने में बड़ी दिक्कत होती थी। बहु-बेटे कुछ दिनों तक तो ये सब सहन करते रहे। अगले दिन जब खाने का वक्त हुआ तो बेटे ने एक पुरानी मेज को कमरे के एक कोने में लगा दिया और अपने बूढ़े बाप से बोला कि पिता जी आप यहां पर बैठ कर खाना खाया करो। बूढ़ा पिता वहीं अकेले में बैठ कर अपना भोजन करने लगा, यहां तक की उनके खाने-पीने के बर्तनों की जगह एक लकड़ी का कटोरा दे दिया गया था। बाकी लोग पहले की तरह ही आराम से बैठ कर खाना खाते। वहां बैठा बालक भी यह सब बड़े ध्यान से देखता रहता, और अपने में मस्त रहता। एक रात खाने से पहले, उस छोटे बालक को उसके माता-पिता ने ज़मीन पर बैठकर कुछ करते हुए देखाः तुम क्या बना रहे हो? पिता ने पूछा, बच्चे ने मासूमियत के साथ उत्तर दिया, अरे मैं तो आप लोगों के लिए एक लकड़ी का कटोरा बना रहा हूँ, ताकि जब मैं बड़ा हो जाऊं तो आप लोग इसमें खा सकें, और वह पुनः अपने काम में लग गया। पर इस बात का उसके माता-पिता पर बहुत गहरा असर हुआ। उनके मुंह से एक भी शब्द नहीं निकला और आँखों से आंसू बहने लगे। वो दोनों बिना बोले ही समझ चुके थे कि अब उन्हें क्या करना है। उस रात वो अपने बूढ़े पिता को वापस डिनर टेबल पर ले आये, और फिर कभी उनके साथ अभद्र व्यवहार नहीं किया।

सारा संसार

अमृतसर का स्वर्ण मंदिर केवल भारत ही नहीं बल्कि दुनिया का मशहूर मंदिर है जिसकी गिनती भारत के सबसे चमत्कारिक मंदिर में की जाती है। बहुत कम लोग जानते हैं लेकिन इस मंदिर को हरमंदिर साहिब के नाम से भी जाना जाता है। कहने को तो ये सिखों का गुरुद्वारा है, लेकिन मंदिर शब्द का जुड़ना इसी बात का प्रतीक है कि भारत में हर धर्म को एकसमान माना गया है।

दिवाली पर्व

प्रियंका श्रीवास्तव

अमेरिका में दिवालीः जहां प्रकाश मिलता है नेतृत्व से

हर साल पतझड़ के मौसम में, जब अमेरिका के शहरों की सड़कें और इमारतें रंग-बिरंगी रोशनी से जगमगाती हैं, एक अलग तरह की चमक भी फैलती है- दिवाली की रोशनी। कभी यह जश्न सिर्फ भारतीय प्रवासियों के घरों तक सीमित था, लेकिन अब यह त्योहार कॉर्पोरेट बोर्डरूम, विश्वविद्यालयों और सामुदायिक केंद्रों में सांस्कृतिक समावेश, धैर्य और नवीनीकरण का प्रतीक बन गया है। जब मैं पहली बार अमेरिका आई थी, दिवाली का मतलब था छोटे से अपार्टमेंट में दीये जलाना, फैमिली के साथ वीडियो कॉल पर जुड़ना, और कुछ करीबी दोस्तों के साथ घर का बना मिठाई साझा करना। समय के साथ वह छोटा सा मंडल बढ़ता गया-सहकर्मी शामिल हुए, स्कूलों में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए, और यहां तक कि कंपनियों के लॉबी में रंगोली सजने लगी। जो कभी सिर्फ यादों की बात थी, वह अब एक 'समान भाव' बन गई।

साझा मूल्यों का त्योहार : दिवाली का संदेश-अंधकार पर प्रकाश की जीत, अज्ञान पर ज्ञान की जीत, और निराशा पर आशा की जीत- धर्म और देश की सीमाओं को पार कर जाता है। यह आधुनिक नेतृत्व के नजरिए के समान हैः जटिलता में स्पष्टता, प्रतिस्पर्धा में सहानुभूति, और अनिश्चितता में साहस। कार्यालयों में दिवाली मनाना सिर्फ सांस्कृतिक पहचान का मामला नहीं है-यह हमें याद दिलाता है कि समावेश ही नवाचार है। जब संगठन विविध परंपराओं का सम्मान करते हैं, तो वे ऐसे वातावरण का निर्माण करते हैं जहां लोग अपने पूरे व्यक्तित्व के साथ काम में शामिल हो सकते हैं-और जहां सृजनात्मकता वास्तव में चमकती है।

प्रकाश को विरासत बनाना : मेरे लिए हर साल दीया जलाना व्यक्तिगत और पेशेवर दोनों दृष्टि से महत्व रखता है। यह एक चिंतन का अनुष्ठान है-इस पर कि क्या हासिल किया गया, क्या सीखा गया, और हम कौन-सा प्रकाश आगे ले जा सकते हैं। एक ऐसी दुनिया में, जो अक्सर शोर और गति से परिभाषित होती है, दिवाली हमें रुकने का अवसर देती है। यह हमें प्रेरित करती है कि हम सहानुभूति के साथ नेतृत्व करें, ईमानदारी से निर्माण करें, और याद रखें कि विकास -चाहे वह व्यवसाय में हो या जीवन में-भीतर से प्रकाशित होने से शुरू होता है।

इस साल, जब अमेरिका में दीयों की रोशनी फैल रही है, यह एक शांत लेकिन शक्तिशाली कहानी बयां करती हैः कि जब प्रकाश साझा किया जाता है, तो वह और भी बढ़ता है और शायद यही दिवाली का असली नेतृत्व सबक है।

-एसोसिएट डीन, हुल्ट इंटरनेशनल बिजनेस स्कूल सैन फ्रांसिस्को, अमेरिका की रिपोर्ट

शोभा यात्रा

दीपोत्सव के मौके पर अयोध्या में रविवार, 19 अक्टूबर, 2025 को आयोजित शोभा यात्रा में कलाकार हिस्सा लेते हुए। दीप पर्व पर राम की नगरी अयोध्या में भव्य यात्रा निकाली गई।

आज की पाती

विद्यार्थी मोबाइल से दूरी बनाए रखें

राज्य सरकार सभी स्कूलों में शिक्षकों और विद्यार्थियों को स्कूल समय में मोबाइल का उपयोग करने पर प्रतिबंध लगाए। अगर स्कूलों और अन्य शिक्षा संस्थानों में मोबाइल प्रयोग की खुली छूट दे दी जाए तो बहुत से विद्यार्थी इसका दुरुपयोग ही करते हैं, इसलिए यह जरूरी है कि यहां मोबाइल पर प्रतिबंध लगे, लेकिन अगर शिक्षकों के मोबाइल प्रतिबंधित नहीं होंगे और शिक्षक पढ़ाने के दौरान मोबाइल प्रयोग करेंगे तो इसका विद्यार्थियों पर नकारात्मक प्रभाव पडेगा। विद्यार्थियों को चाहिए कि वो अपनी जिंदगी का कीमती समय बेवजह बर्बाद न करें। टेक्नोलॉजी का उचित प्रयोग किया जाए तो वो लाभकारी सिद्ध होती है और दुरुपयोग हानिकारक।

– प्रेम त्रिपाठी, भाटापारा

ट्रेंड

बंगाल घुसपैठिया मुक्त होगा

गुजरात, राजस्थान, असम में घुसपैठ नहीं होती, क्योंकि वहाँ भाजपा सरकार है, बंगाल और झारखंड में घुसपैठियों का स्वागत वोट बैंक के लिए होता है। बंगाल से ममता सरकार हटने और भाजपा सरकार आने के बाद बंगाल घुसपैठिया मुक्त होगा।

-अमित शाह, केंद्रीय गृहमंत्री

अर्थव्यवस्था को नई उड़ान

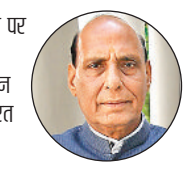

लखनऊ का स्ट्रैटेजिक मटेरियल टेक्नोलॉजी कॉम्प्लेक्स, औद्योगिक नक्शे पर एक नया आयाम जोड़ने वाला है। इससे एक नई इनोवैशन चेन भी बनेगी, जो न केवल रक्षा तकनीक में आत्मनिर्भर भारत का सपना पूरा करेगी, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को भी नई उड़ान देगी।

- राजनाथ सिंह, रक्षामंत्री

ग्रीन पटाखों का प्रयोग करें

सालों बाद दिल्ली में दिवाली का उत्सव फिर से अपने पूरे रंग और रोशनी के साथ मनाया जाएगा। आप सभी से अपील है कि इस दीपावली केवल प्रमाणित ग्रीन पटाखों का ही प्रयोग करें और निर्धारित दिशा-निर्देशों का पालन अवश्य करें।

- रेखा गुप्ता, सीएम, नई दिल्ली

हृदय को प्रकाशित करें

जिस प्रकार अयोध्यावासियों ने भगवान राम के वास्तविक निवास में स्वागत के लिए नगर को प्रकाशित किया था, आइए हम भी उनके वास्तविक निवास में स्वागत करने के लिए अपने हृदय को प्रकाशित करें..

- शेखर कपूर, फिल्मकार

करंट अफेयर

चोरी की घटना के बाद फ्रांस का लूव्र संग्रहालय किया बंद

फ्रांस के लूव्र संग्रहालय में रविवार को चोरी की एक घटना हुई और इसे दिन भर के लिए बंद कर दिया गया है जबकि प्राधिकारी मामले की जांच कर रहे हैं। यह जानकारी फ्रांस की संस्कृति मंत्री रचिदा दाती ने दी। रचिदा दाती ने 'एक्स' पर पोस्ट किया, आज सुबह लूव्र संग्रहालय खुलने के समय चोरी की एक घटना हुई।खबर में कहा गया है कि उन्होंने अपोलो गैलरी के लक्षित कमरे तक सीधे पहुंचने के लिए एक मालवाहक लिफ्ट का इस्तेमाल किया। 'ले पेरिसियन' की खबर के अनुसार, खिड़कियां तोड़ने के बाद, अपराधियों ने कथित तौर पर नेपोलियन और महारानी के आभूषण संग्रह से नौ आभूषण चुरा लिये। लूव्र संग्रहालय में चोरी और डकैती के प्रयासों का एक लंबा इतिहास रहा है। वर्ष 1911 में हुई घटना में मोना लिसा की पेंटिंग फ्रेम से गायब हो गई थी, जिसे विन्सेन्जो पेरुगिया नामक एक पूर्व कर्मचारी ने चुरा लिया था, जो संग्रहालय के अंदर छिप गया और पेंटिंग अपने कोट के नीचे छिपाकर बाहर निकल गया। पेंटिंग दो साल बाद फ्लोरेंस में बरामद की गई। इस घटना ने लियोनार्डो दा विंची के चित्र को दुनिया की सबसे प्रसिद्ध कलाकृति बनाने में मदद की।

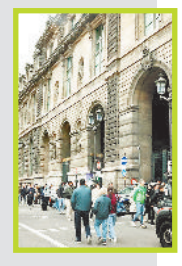

ऑफ बीट

आंत रोग की कुछ स्थितियां पार्किंसंन के लिए जिम्मेदार

कुछ गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल समस्याएं, जैसे निगलने में कठिनाई, कब्ज और आंत विकार (आईबीएस) पार्किंसंन रोग के जोखिम से जुड़ी हो सकती हैं। एक अध्ययन से यह जानकारी सामने आई है। पार्किंसंन एक मस्तिष्क विकार है, जिसके कारण शरीर में कंपकंपी, ऐंठन और संतुलन एवं समन्वय बैठाने में कठिनाई होती है। शोधकर्ताओं ने कहा कि पूर्व में आंत की कुछ समस्याओं को पक्षाघात या मस्तिष्क धमनी विकार या अल्जाइमर रोग जैसी बीमारियों का कारण बनने से जोड़ा गया है। पत्रिका 'गट' में प्रकाशित नवीनतम अध्ययन में अमेरिकी राष्ट्रव्यापी मेडिकल रिकॉर्ड नेटवर्क (ट्राइनेटएक्स) के 24,624 लोगों के आंकड़ों का उपयोग किया गया, जिन्हें अज्ञात कारण से पार्किंसंन रोग हुआ था। ऐसे लोगों की तुलना उन लोगों से की गई, जो अन्य मस्तिष्क विकार स्थितियों जैसे अल्जाइमर रोग (19,046) या सेरेब्रोवास्कुलर रोग से ग्रसित (23,942) या इनमें से कोई भी नहीं (24,624) पाए गए थे। पार्किंसंन रोग से पीड़ित लोगों का उनके इस रोग का पता चलने से औसतन 6 साल पहले के इलेक्ट्रॉनिक स्वास्थ्य रिकॉर्ड में शामिल आंत रोग स्थितियों की आवृति की तुलना करने के लिए उम्र, लिंग और अन्य विवरणों के आधार पर अन्य समूहों के लोगों के साथ मिलान किया गया था।

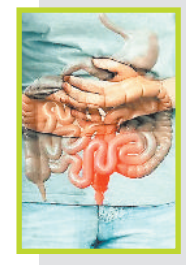

हमारा पता

हरिभूमि कार्यालय
रिंग रोड नं. 2, गौरवपथ, बिलासपुर
फोनः 401050,271016,फैक्स-271018
ई-मेलः haribhoomibsp@gmail.com
वेब-साइटः www.haribhoomi.com

बिलासपुर

सोमवार 20 अक्टूबर 2025

कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावस्या

वर्ष : 25, अंक : 208

पृष्ठ : 12+16 = 28 मूल्य : 4.00***

मौसम

अधि. 32.0

न्यून. 20.5

हरिभूमि

छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित

समाचार ही नहीं, विचार भी

haribhoomi.com

नक्सलियों से जब्त हथियारों का जखीरा हो रहा जमा, जिनसे लूटे, उनको वापस करने का प्रावधान

नक्सलियों के समर्पण के साथ ही हथियारों का जखीरा भी हो रहा है जमा

छत्तीसगढ़ में इस समय बड़ी संख्या में नक्सली पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर रहे हैं, जो नक्सली हथियारों से लैस रहे हैं, वे अपने हथियार पुलिस को सौंप रहे हैं। इसके साथ ही पुलिस मुठभेड़ के दौरान भी नक्सलियों के हथियार पुलिस के हाथ लग रहे हैं, लेकिन ये एक बड़ा सवाल है कि पुलिस आखिर इन जब्तशुदा हथियारों का क्या करती है?

हरिभूमि न्यूज□रायपुर

इस संबंध में उच्च पदस्थ सूत्रों ने हरिभूमि को बताया कि इस तरह मिले हथियारों को सबसे पहले पुलिस सेफ कस्टडी में रखती है। इसके साथ ही ये जांच की जाती है ये हथियार किस जिले या किस राज्य से लूटे गए हैं। इस संबंध में ये प्रावधान है कि जहां से हथियार लूटे गए होते हैं वहां उन्हें वापस कर दिया जाता है।

राज्य में इस समय पुलिस और सुरक्षाबलों ने नक्सलवादियों के खिलाफ जमकर शिकंजा कस रखा है। पुलिस के सामने बड़ी संख्या में नक्सली नेता, कमांडर और उनके अलग-अलग दलम, संघम या फ्रंटल आर्गेनाइजेशन से जुड़े नक्सली लगातार समर्पण कर रहे हैं। इसके पीछे सरकार का दबाव और सरकार द्वारा बनाई कई नक्सल पुनर्वास नीति की भी बड़ी भूमिका है। इसी नीति के तहत जो नक्सली जितने बड़े हथियार के साथ समर्पण करता है, ▶▶|शेष पेज 4 पर

ऐसा है प्रावधान

उच्च पदस्थ पुलिस सूत्रों के अनुसार नक्सलियों के कब्जे से बरामद होने वाले हथियारों में अधिकतर वह हथियार होते हैं जो पुलिस से लूटे, छीने या चुराए गए होते हैं। ये हथियार राज्य के ही अलग-अलग जिलों के अलावा अन्य प्रदेशों के भी होते हैं। पुलिस के पास ये हथियार आने के बाद सबसे पहले उनकी सुरक्षा सुनिश्चित की जाती है। यानी उन्हें सेफ कस्टडी में रखा जाता है। अपराधों से संबंधित मामलों के हथियारों पर अदालत के आदेश से कार्यवाही होती है। जो हथियार पुराने या खराब हो जाते हैं उन्हें अदालत के आदेश पर नष्ट करने का प्रावधान है। इस तरह बरामद हथियारों को सुरक्षित जगह पर रखना संबंधित जिले के पुलिस अधीक्षक की जिम्मेदारी होती है। जब ये साफ हो जाता है कि हथियार किस जिले या राज्य का है तो उसे वहां वापस कर दिया जाता है।

ज्यादातर हथियार पुलिस के ही

छत्तीसगढ़ की बात की जाए तो यहां कुछ थानों में घुसकर हथियारों की लूट की वारदात हो चुकी है। नक्सलियों से मुठभेड़ के दौरान शहीद होने वाले पुलिस एवं सुरक्षा बलों के हथियार भी नक्सली ले जाते हैं और इनका उपयोग फिर पुलिस के खिलाफ ही करते हैं। फिलहाल जब बड़ी संख्या में नक्सली समर्पण कर रहे हैं तो वे अपने हथियार भी डाल रहे हैं, राज्य के नक्सल प्रभावित जिलों में हथियारों का जखीरा भी जमा हो रहा है।

नक्सलियों ने छोड़े इतने हथियार

बस्तर रेंज के पुलिस महानिरीक्षक सुंदरराज पी. के अनुसार पिछले दिनों समर्पण करने वाले नक्सलियों से 153 हथियार बरामद किए गए हैं। इसमें एके 47, 19 राइफल, एसएलआर 17 राइफल. इंसास 13 राइफल, इंसास एलएमजी 1 नग, थ्री नाट थ्री 36 राइफल, कार्बाइन : 4 राइफलें, बीएलजी लांचर 11 नग, 12 बोर सिंगल शाटगन 41, पिस्तौल 1 नग आदि मिल हैं। इनमें से जो हथियार पुलिस से लूटे गए हैं, उनकी पहचान कर कोर्ट के आदेश से और अनुमति लेकर संबंधित जिले या राज्य की पुलिस को सौंपने का प्रावधान है। इसके अनुसार आगे की कार्यवाही की जाएगी।

लालू के घर हंगामा

टिकट नहीं मिलने पर फूट-फूटकर रोए राजद नेता, कपड़े फाड़े, कहा- मांगे 2.70 करोड़

एजेंसी ▶▶| पटना

बिहार विधानसभा चुनाव के लिए टिकट बंटवारे को लेकर रविवार को राष्ट्रीय जनता दल अध्यक्ष लालू प्रसाद के आवास के बाहर नाटकीय घटनाक्रम देखने को मिला, जब टिकट न मिलने पर एक नेता फूट-फूटकर रोने लगे, अपने कपड़े फाड़ लिए और सड़क पर लेट गए। मधुबन सीट से टिकट की उम्मीद लगाए बैठे मदन साह ने आरोप लगाया कि उनसे टिकट देने के एवज में 2.70 करोड़ रुपए मांगे गए थे। उनका यह वीडियो सोशल मीडिया ▶▶|शेष पेज 4 पर

7.43 करोड़ वोटर

बता दें कि चुनाव आयोग ने 6 अक्टूबर 2025 को आधिकारिक शेड्यूल जारी किया था। आयोग के अनुसार, इस चुनाव में कुल 7.43 करोड़ वोटर (जिनमें 14 लाख नए वोटर) अपने मत का प्रयोग कर सकेंगे। बिहार विधानसभा की सभी 243 सीटों के लिए वोटिंग दो फेज में होगी। पहला चरण 6 नवंबर और दूसरा चरण 11 नवंबर को मतदान किया जाएगा। परिणाम 14 नवंबर को घोषित किया जायेगा।

तेजस्वी के करीबी ने मांगे दो करोड़ 70 लाख

मदन शाह ने राजद नेता तेजस्वी यादव के करीबी संजय यादव पर गंभीर आरोप लगाए हैं। शाह का कहना है कि यादव ने उनसे 2.70 करोड़ रुपए मांगे हैं। शाह का आरोप है कि संजय टिकट बेच रहे हैं। टिकट के बदले पैसे मांगे गए थे। पैसे देने से मैंने मना किया तो मेरा टिकट काट दिया और डॉ. संतोष कुशवाहा को दे दिया। बता दें, संतोष कुशवाहा सीमांचल में जदयू के कद्दावर नेता थे, जिन्होंने हाल मे राजद का दामन थामा है।

समोसे के बदले यात्री से लिया घड़ी, केस दर्ज

जबलपुर। पश्चिम मध्य रेलवे के जबलपुर स्टेशन पर समोसे के एवज में एक यात्री से उसकी घड़ी ले लेने वाले वेंडर (विक्रेता) के खिलाफ मामला दर्ज कर उसे हिरासत में ले लिया गया है। रेलवे के एक अधिकारी ने बताया कि इस घटना का एक वीडियो सोशल मीडिया पर प्रसारित होने के बाद रेलवे ने अब आरोपी वेंडर का लाइसेंस रद्द करने की तैयारी शुरू कर दी है।

हिरासत में वेंडर

जबलपुर डिविजनल रेलवे मैनेजर 'एक्स' पर किए गए इस पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा, वेंडर की पहचान कर ली गई है तथा आरपीएफ ने मामला दर्ज कर उसे हिरासत में ले लिया है।

HONDA
The Power of Dreams
How we move you.
CREATE ▸ TRANSCEND, AUGMENT

The Honda Joy Fest

Bring Home a Honda, Bring Home Joy

^GET GST BENEFIT UP TO ₹14000/-

इंस्टैंट कैशबैक ₹5000/-** तक | लोन 100%* तक | कम ब्याज दर @6.99%* | कम EMI ₹49* प्रतिदिन

Scan to download
MyHonda-India
Customer Connect App
HDFC BANK Credit Card
IDFC FIRST Bank CREDIT CARDS
अधिक जानकारी के लिए 7230032200 पर मिस्ड कॉल दें
डीलर विवरण के लिए QR कोड स्कैन करें

Terms and Conditions applied. *Approval of the loan is at the sole discretion of the financiers, and additional documentation may be required. *The interest rates, loan amount, down payment, tenure options and EMI are based on the financier's assessment of the applicant's credit profile. *Low EMI offers are applicable for select HMSI models as follows: ₹49/- per day for Shine100 DX ; ₹79/- per day for Shine125, SP125 & CB125 Hornet; ₹1999/- per month for Activa. *Some of the mentioned components of the scheme cannot be clubbed together. *The offers/features may be modified or withdrawn at any time without prior intimation. *Offer valid until 31st October 2025. **Instant Cashback up to ₹5000 is available on selected HMSI models for EMI transactions using HDFC Bank credit cards with a minimum transaction value of ₹40000. **An instant cashback of flat ₹2000 is applicable on a minimum full swipe transaction of ₹40000, and flat ₹3000 Instant cashback on a minimum full swipe transaction of ₹75002. **Instant Cashback up to ₹4000 is available on selected HMSI models for EMI transactions made using IDFC Bank credit cards with a minimum transaction value of ₹40000. **The offer is valid on credit card transactions processed through Pine Labs machines only and is applicable for one transaction per card/order during the offer period. **The Instant Cashback offers from HDFC Bank and IDFC Bank are valid until 31st October 2025. ^GST benefit is based on a reduction from 28% to 18% GST on the Ex-showroom price of NX 200. ^The actual savings may vary depending on the selected model and state. Product shown in the picture may vary from actual product available in the market. Accessories shown in the picture are not part of standard equipment.

Honda Motorcycle & Scooter India Pvt. Ltd., Registered Office: Plot No. 1, Sector - 03, IMT Manesar, Distt. Gurugram, (Haryana) – 122052, India; **Website:** www.honda2wheelersindia.com; **Customer Care:** customercare@honda.hmsi.in

Honda Exclusive Authorized Dealerships: BILASPUR: Dream Honda - 9926802408; Maosaji Honda - 7024149881; **AKALTARA:** Bhagwati Honda - 9827527016; **AMBIKAPUR:** Mahamaya Honda - 7489027000; Jaswani Honda - 8358065000; **BAIKUNTHPUR:** Pramila Honda - 7000405012; **BARADWAR:** Ganpati Honda - 7974875687; **BILHA:** Sai Honda - 9179256022: **KAWARDHA:** Pratha Honda - 7400550099; **DHARAMJAIGARH:** Harsh Honda - 9424180180; **DIPKA:** Kamal Honda - 9111144667; **JANJGIR CHAMPA:** Gattani Honda - 7694011206; Shubh Honda (Baloda) - 8574921111; **JASHPUR:** Deo Narayan Honda - 94061084642; **KHARSIA:** Balaji Honda - 8269515770; **KORBA:** Vishal Honda - 9479025937; Krishna Korba Honda - 7747015377; JP Honda (Hardi Bazar) - 9826129114; Ashwini Honda (Urga) - 6232103023; Bharat Honda (GevraBasti) - 09301001739; **KOTA:** Prakash Honda - 9826417995; **KUNKURI:** Mansharam Honda - 8103798783; **LAILUNGA:** Atul Honda - 9424188280; **LORMI:** Mansi Honda - 9685010000; **MANENDRAGARH:** Harsh Honda - 9993883343; **MASTURI:** Rahul Honda - 9098619245; **PALI:** Mahamaya Honda - 8770804342; **PAMGARH:** Gautam Honda - 8962109746; **PANDARIYA:** Shri Balaji Honda - 7399330099; **PATHALGAON:** Dinesh Honda - 9993199987; **PENDRA ROAD:** Dev Honda - 9752998221; **RAHOD:** Shri Balaji Honda - 9977311242; **RAIGARH:** Sharda Honda - 8103664400; Shanti Auto Honda - 9343609280; **RAJPUR:** Maa Mahamaya Honda - 9424259688; **RAMANUJGANJ:** Vikas Honda - 9926158656; **RATANPUR:** Sunil Honda - 9893354893; **SAKTI:** Maa Durga Honda - 9685927215; **SARAIPALI:** Pukhraj Honda - 8889798000; **SARANGARH:** Akshat Honda - 9406353035; **SARSIVA:** Kanisk Honda - 9575533947; **SHEORINARAYAN:** Arav Honda - 8109955535; **SITAPUR:** Akash Honda - 9617378301; **PRATAPUR:** Shri Banbhori Honda - 8120806101; **SURAJPUR:** Shri Om Honda - 9826774095; **TAKHATPUR:** Dream Honda - 9303005917; **TAPKARA:** Jindal Honda - 9406384666; **WADRUFNAGAR:** KP Auto - 9826881578; **BILASPUR SAKRI:** Dream Honda Branch - 9516661444; **BILASPUR DAYALBANDH:** Maosaji Honda Branch - 9109690484; **GAURELLA:** Shyam Honda - 7024806222; **AHIWARA:** Kabiram Honda - 8319225193; Shree Sairam Honda (Risali) - 8823050333; **DANTEWADA:** Ansh Honda - 7000396031; **NEHRU NAGAR:** Aan Honda - 8581020999; **MUNGELI:** S. Mansi Honda - 9685010000.

For Bulk/Institutional enquiries, please write us at: institutionalsales@honda.hmsi.in

ॐ

गोदड़ीवाला ग्रुप

Celebrating Togetherness, Building Futures.

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं...

Godriwala Presents
POOJA®
MOULDED FURNITURE & HOUSE HOLD PRODUCTS

।। माँ लक्ष्मी जी की आरती ।।

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशिदिन सेवत, हर विष्णु विधाता।।
।। ॐ जय लक्ष्मी माता।।
उमा रमा ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता।।
।। ॐ जय लक्ष्मी माता।।
दुर्गा रूप निरंजनी, सुख सम्पत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्याता, ऋद्धि-सिद्धि पाता।।
।। ॐ जय लक्ष्मी माता।।

तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभदाता।।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनी, भव निधि की त्राता।।
।। ॐ जय लक्ष्मी माता।।
जिस घर में तुम रहतीं, सब सद्गुण आता।
सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता।।
।। ॐ जय लक्ष्मी माता।।
तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न कोई पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता।।
।। ॐ जय लक्ष्मी माता।।

शुभगुण मंदिर सुंदर, क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता।।
।। ॐ जय लक्ष्मी माता।।
महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई नर गाता।
उर आनंद समाता, पाप उतर जाता।।
।। ॐ जय लक्ष्मी माता।।
।। मैया जय लक्ष्मी माता।।

गोदड़ीवाला प्लास्टिक प्राइवेट लिमिटेड

MM Junior School — NURTURING CHILDREN WITH CARE
MM Funcity — FUN for ALL
Godriwala Presents MM SCHOOL — MODERN EDUCATION WITH MORALS
MM Real Estate
M.M. POLYMERS Private Limited

भारत की ऑनलाइन दिवाली बिक्री में गैर-महानगर का योगदान बढ़ा

नई दिल्ली। इस साल ऑनलाइन दिवाली खरीदारी में गैर-महानगर शहरों का योगदान सबसे ज्यादा रहा, जो कुल ई-कॉमर्स बिक्री मात्रा का लगभग तीन-चौथाई हिस्सा रहा। इसमें भी तीसरी श्रेणी के शहरों का योगदान 50 प्रतिशत से अधिक रहा। लॉजिस्टिक मंच 'क्लिकपोस्ट' ने 4.25 करोड़ से अधिक ऑर्डर के उद्योग आंकड़ों का विश्लेषण करके यह जानकारी दी।

इसके मुताबिक ये क्षेत्र अब त्योहारी ई-कॉमर्स को बढ़ाने वाले सबसे तेज और सबसे बड़े संचालक बन गए हैं। ऐसे में ऑर्डर की मात्रा और वृद्धि के लिहाज से गैर-महानगरों की भूमिका और मजबूत हो गई है। रिपोर्ट में कहा गया, ''गैर-महानगर भारत का आकार हौरान करने वाला है। वर्ष 2025 में सभी ऑर्डर में 50.7 प्रतिशत अकेले तीसरी श्रेणी के शहरों से आए। दूसरी श्रेणी (24.8 प्रतिशत) और तीसरी श्रेणी के शहर भारत के कुल ऑर्डर (मात्रा के लिहाज से) का लगभग तीन-चौथाई (74.7 प्रतिशत) प्रतिनिधित्व करते हैं।

त्योहारों के बाद भौतिक मांग कम होने से सोने में गिरावट संभव

नई दिल्ली। अगले सप्ताह सोने की कीमतों में कुछ हद तक स्वस्थ गिरावट देखने को मिल सकती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हालिया रिकॉर्ड तेजी अब भी जारी है, लेकिन त्योहारों के बाद भौतिक मांग कम हो गई है। विश्लेषकों ने यह राय जाहिर की। वैश्विक और घरेलू बाजारों में नई ऊंचाइयों को छूने के बाद सर्राफा एक सीमित दायरे में कारोबार कर सकता है, क्योंकि निवेशकों की नजर अमेरिकी वित्त पोषण विधेयक, प्रमुख वैश्विक आंकड़ों और फेडरल रिजर्व के अधिकारियों की टिप्पणियों पर है।

जेएम फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड के जिंस एवं मुद्रा शोध के उपाध्यक्ष प्रणव मेर ने कहा, ''सोने की कीमतों में कुछ स्वस्थ गिरावट देखने को मिल सकता है, क्योंकि मौजूदा बुनियादी बातों का पहले ही मूल्यांकन हो चुका है और सप्ताह के मध्य के बाद भौतिक मांग कम हो जाएगी।'' उन्होंने आगे कहा कि कारोबारी प्रमुख वैश्विक संकेतकों पर नजर रखेंगे, जिनमें चीन के आंकड़े, ब्रिटेन की मुद्रास्फीति, विभिन्न क्षेत्रों के पीएमआई आंकड़े, अमेरिकी उपभोक्ता विश्वास के आंकड़े और फेडरल रिजर्व की टिप्पणी शामिल हैं। मेर ने आगे कहा कि भारत में त्योहारी मांग और ईटीएफ की मजबूत खरीदारी के कारण पिछले सप्ताह सोना सकारात्मक रुख के साथ बंद हुआ।

प्रथम पृष्ठ का शेष

अयोध्या में 26...

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के लिए प्रमाण पत्र ग्रहण किया। अयोध्या में पहले में राम की पैड़ी के घाटों पर 26 लाख 17 हजार 217 दीपक जलाए गए। ड्रोन से दीपों की गणना के बाद गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड की ओर से स्वप्निल दंगारीकर व कंसल्टेंट निश्चल बरोट ने नए कीर्तिमान की घोषणा की। यह लगातार नौवीं बार विश्व रिकॉर्ड बना है। सीएम योगी आदित्यनाथ, प्रभारी मंत्री सूर्य प्रताप शाही सहित अन्य इस अद्भुत व अविस्मरणीय क्षण के साक्षी बने। दीपोत्सव के इस दुर्लभ दृश्य को देखने के लिए देश के कोने-कोने से लोग उमड़े। बड़ी संख्या में लोग यहां मौजूद रहे। दीपोत्सव के बाद यहां भव्य आतिशबाजी और ड्रोन शो हुआ।

वर्ष 1954 पश्चात...

योग बने हैं। इससे पहले वर्ष 1954 में दीपावली के मौके पर ग्रहों का ऐसा संयोग बना था। इस बार गुरु अपनी उच्च राशि कर्क में गोचर करेंगे जिससे हंस राजयोग प्रभाव में आएगा। गुरु का यह संयोग बेहद शुभ माना जाता है और यह योग व्यक्ति के जीवन में वैभव, बुद्धि, सम्मान और समृद्धि लाने वाला होता है। दिवाली जैसे पावन पर्व पर इस राजयोग का बनना इस दिन की धार्मिक और ज्योतिषीय महत्ता को और अधिक बढ़ा देता है। वहीं, सूर्य और बुध की युति तुला राशि में होने से बुधादित्य राजयोग बनेगा। इसके अलावा सर्वार्थ सिद्धि योग के साथ-साथ कलानिधि योग का संयोग भी रहने वाला है।गौरतलब है कि इस बार अमावस्या तिथि दो दिनों तक रहेगी। इस वर्ष कार्तिक अमावस्या की तिथि 20 अक्टूबर दोपहर तीन बजकर 44 मिनट से प्रारंभ होगी। इस तिथि का समापन 21 अक्तूबर को शाम पांच बजकर 54 मिनट पर है। दिवाली पर लक्ष्मी पूजन सूर्यास्त के बाद किया जाता है, इसलिए इस साल दिवाली 20 अक्टूबर को मनाई जाएगी। इस दिन शाम 7 बजकर 8 मिनट से रात 8 बजकर 18 मिनट तक पूजा का शुभ मुहूर्त रहेगा। बही-खाते की पूजा भी इसी दौरान की जाएगी।

आदिवासी समाज...

का रंग कार्तिक अमावस्या के अगले दिन देखने को मिलता है। दिवाली के दिन पूरे देश में घरों को रोशन करने एवं धन-वैभव के लिए माता लक्ष्मी की पूजा करने की परंपरा है। आदिवासी समाज में दिवाली मनाने की परंपरा नहीं है। आदिवासी समाज दिवाली के दूसरे दिन अपनी रचनात्मकता एवं समृद्धि का त्योहार सोहराई मनाता है। दिवाली के पूर्व धान, मक्का, उड़द सहित अन्य सभी खरीफ फसलें कट जाती हैं। उनकी मिसाई भी हो जाती है तथा फसल खलिहान से घर पहुंच जाती है। नई फसल से धान का कोठार भर जाता है। यह फसल ही तो किसान की समृद्धि है। इस समृद्धि को लाने में पशुओं का खास योगदान होता है। बैल-भैंसे से किसान खेतों की जुताई एवं फसल की मिसाई करते हैं। मवेशियों के गोबर का कम्पोस्ट खाद खेतों को उर्वर बनाता है। इसलिए आदिवासी समाज के लोग सोहराई त्योहार पर अपने बैलों एवं अन्य मवेशियों को नहलाते हैं तथा फूल-माला से उनका भव्य सजावट करते हैं। सोहराई पर गोधन के सींग में तेल एवं सिंदूर का लेप लगाते हैं। मान्यता है कि सोहराई में मवेशियों के सींग में तेल व सिंदूर का लेप लगाने से उन्हें पूरे साल कोई संक्रामक बीमारी नहीं होती न ही किसी के टोने-टोटके का असर होता है। मवेशी साल भर ऊर्जावान बना रहता है तथा अपने वंश की वृद्धि करता है। मवेशी ही तो किसान की संपत्ति है। मवेशियों को सजाने के बाद उन्हें श्रद्धापूर्वक चावल, चना, मटर, मक्का, बरबट्टी बीच एवं मीठे कोहड़े की खिचड़ी खिलाया जाता है। इस दिन घर के मुख्य द्वार एवं मवेशियों के कोठार में पूरी रात दिया जलाया जाता है। पहले चावल के आटे के दिए बनाए जाते थे लेकिन बाद में लोग अपने हाथों से निर्मित कच्चे मिट्टी के दिए जलाने लगे। अब कुम्हार द्वारा निर्मित दियों का उपयोग गांव-गांव में किया जा रहा है। सोहराई के दिन आदिवासी समाज में मीठा पकवान खाने व समाज के लोगों को खिलाने की परंपरा है। इस दिन लोग गुड़ एवं पके कोहड़े को उबालकर चावल के आटे के विविध मीठे पकवान एवं मिश्रित अनाजों की खिचड़ी खाते हैं तथा एक-दूसरे को खिलाते हैं। सोहराई त्योहार पर दीप जलाने के लिए समुदाय के लोग घर में उपलब्ध डोरी बीज अथवा जटगी के बीजों को माप कर लकड़ी के पारंपरिक औजार तीरही के सहारे अपने हाथों से तेल निकलते हैं तथा इसी तेल का उपयोग अपने पशुओं की सींग सजाने व स्वयं के लिए करते हैं। वे बाजार के तेल का उपयोग पूजा में नहीं करते। इस दिन आंगन में चावल के आटे से बैल के पदचिन्ह भी बनाए जाते हैं।

चरवाहे करते हैं लड़ने का स्वांग- गांवों में मवेशियों को चराने के लिए चरवाहा रखने की परंपरा है। चरवाहे को गयार कहा जाता है। सोहराई के दिन गांव के चरवाहों का दल मांदर की थाप पर नाचते-गाते अपने गृहस्थ के घर पहुंचते हैं। गृहस्थ गयार की अच्छी तरह खातिरदारी करता है तथा उन्हें पकवान परोसता है। इस दौरान सभी गयार चौपाया बनकर एक-दूसरे से लड़ने का स्वांग करते हैं। गयार अपने गृहस्थ के एक बछड़े को पकड़ने का स्वांग करता है तो गृहस्थ उसे भरपूर अनाज व पैसे देकर मनाता है। काफी मान-मनव्वल के बाद गयार मानता है। इस दौरान गयार चौपाया का स्वांग करते हुए कुछ भी खाता-पीता है।

दमकने लगता है घर-आंगन- आदिवासी समाज में सोहराई पर घर-आंगन का भव्य सजावट करने की परंपरा है। महिलाएं घर की कच्ची दीवारों एवं आंगन की साफ-सफाई कर काली, सफेद व लाल मिट्टी से लिपाई करती हैं। इस दौरान गिरमी मिट्टी से ही महिलाएं अपनी उंगलियों से तरह-तरह की ज्यामितीय आकृतियां, अस्पष्ट लिपियां, मानव व पशु-पक्षियों की आकर्षक आकृतियां उकेरती हैं। पहले पुरानी आकृतियों को साफ किया जाता है फिर नई आकृतियां बनाई जाती है। घरों की सफाई ऐसी होती है कि राई का दाना भी गिर जाए तो उसे आसानी से खोजा जा सकता है।

तीन दिनों तक चलता है उत्सव- आदिवासी समाज का कोई भी उत्सव उन्मुक्त मौज-मस्ती एवं नाच-गाने के बिना पूरा नहीं होता। सोहराई का उत्सव तीन दिनों तक चलता है। इस अवसर पर घर-घर हड़िया बनती है। लोग एक-दूसरे को हड़िया पिलाते हैं तथा मांदर के थाप पर उन्मुक्त होकर नाचते-गाते रहते हैं। पहाड़ी कोरवा समाज के वरिष्ठ पदाधिकारी ग्राम गोविंदपुर निवासी मानसाय बताते हैं कि उनके समाज में सोहराई पर मवेशियों को भी हड़िया पिलाने एवं चरवाहों को खुश करने की परंपरा है। पण्डो समाज के प्रदेशाध्यक्ष उदय पण्डो बताते हैं कि सोहराई पर पशुओं को धन-सम्पदा का प्रतीक मानकर पूजा की जाती है। बिरहोर समाज के रघुनाथ राम के अनुसार सोहराई के दिन मवेशियों के साथ ही देवी-देवताओं की पूजा की जाती है।

समृद्धि का प्रतीक- आदिवासी संस्कृति में सोहराई का त्योहार समृद्धि का प्रतीक है। इस दिन आदिवासी समाज की महिलाएं अपनी रचनात्मकता से घर-आंगन को सजाती हैं। आदिवासी प्रकृति के उपासक हैं तथा उनका कोई भी उत्सव उन्मुक्त नृत्य-गीत के बिना पूरा नहीं होता

प्रो. मुकुल रंजन गोयल, सेवानिवृत्त प्राध्यापक एवं लेखक

ट्रंप के खिलाफ...

देशभर में गहरे विरोध को जन्म दे दिया है। शामिल मुद्दों में गर्भपात के अधिकारों पर प्रतिबंध, जलवायु परिवर्तन के खिलाफ की गई नीतियां, और सामाजिक असमानताओं में वृद्धि भी प्रमुख हैं। न्यायपालिका में ट्रंप द्वारा नियुक्त किए गए न्यायधीशों के फैसलों और संघीय पुलिस के कुछ आक्रामक कदमों के विरोध में कई संगठनों ने मिलकर यह विरोध प्रदर्शन आयोजित किया गया। एक ओर जहां प्रदर्शनकारियों का कहना था कि ट्रंप के शासन में लोकतांत्रिक संस्थाओं पर हमला हो रहा है, वहीं दूसरी ओर प्रशासन ने इन विरोधों को "राजनीतिक साजिश" और "सामाजिक असंतोष फैलाने की कोशिश" के रूप में प्रस्तुत किया। इसे 'नो किंग्स प्रोटेस्ट' नाम दिया गया है। यानि अब ट्रंप की तानाशाही नहीं चलेगी का नारा लगाया जा रहा है। यह प्रदर्शन न केवल एक राजनीतिक है, बल्कि यह देशभर में बदलाव की मांग और सामाजिक न्याय की रक्षा के लिए एक बुलंद आवाज के रूप में उभरा है। अमेरिका के बड़े शहरों से लेकर छोटे कस्बों तक हर जगह लोग सड़कों पर उतर चुके हैं। इस विशाल आंदोलन ने यह स्पष्ट कर दिया कि अमेरिका में ट्रंप के खिलाफ असंतोष बढ़ता जा रहा है। यह विरोध प्रदर्शन अमेरिका में ट्रंप के शासनकाल की सबसे बड़ी चुनौती बनकर उभरा है, जो निश्चित रूप से आगामी चुनावों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि इस प्रकार के विरोधों से आने वाले समय में देश में बड़े राजनीतिक बदलाव हो सकते हैं।

विशाल चट्टान से...

का अगला हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। सूत्रों के अनुसार रेलवे प्रशासन ने रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया और दोपहर तक मलबा हटाने का कार्य जारी रहा। पूर्व तट रेलवे के अधिकारियों ने बताया कि हादसे में किसी यात्री की जान नहीं गई। फिलहाल,किरंदुल-विशाखापत्तनम रेल सेक्शन पर ट्रेनों की आवाजाही पूरी तरह ठप है।

नक्सलियों से जब्त...

उसी आधार पर उसे नीति के तहत लाभान्वित करने का प्रावधान है। नक्सलियों के पास आमतौर पर पुलिस से लूटे या छीने गए हथियार ही होते हैं।

टिकट नहीं मिलने...

पर तेजी से वायरल हो गया है। बिहार में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं, जैसे-जैसे चुनाव नजदीक आ रहे हैं। वैसे-वैसे सियासी घटनाएं और बयानबाजियां बढ़ती जा रही हैं। इतना ही नहीं कई सीटों पर तो तनातनी भी देखने को मिल रही है। टिकट बंटवारे को लेकर मचा बवाल अब खुलकर सड़कों पर आ गया है। मधुबन विधानसभा से राजद के पूर्व प्रत्याशी मदन शाह का एक वीडियो वायरल हो रहा है। वायरल वीडियो में राजद के पूर्व प्रत्याशी मदन शाह लालू प्रसाद यादव के घर के सामने फूट-फूटकर रो रहे हैं। उन्होंने अपना कुर्ता तक फाड़ लिया है। साह ने पत्रकारों से कहा, मैं लंबे समय से पार्टी से जुड़ा हूं। 2020 में मैंने इसी सीट से चुनाव लड़ा था और बहुत कम अंतर से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के उम्मीदवार से हार गया था। इस बार टिकट मिलने का पूरा भरोसा था। मुझसे कहा गया कि 2.70 करोड़ रुपये दो। मैंने अपने बच्चों की शादी तक टाल दी और रुपयों की व्यवस्था की। अब मैं पूरी तरह बर्बाद हो गया हूं। कम से कम मेरे रुपये तो लौटा दें। राजद नेताओं ने इस आरोप पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है कि पार्टी के किसी पदाधिकारी ने उनसे टिकट के बदले रुपये मांगे थे। बिहार विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण के लिए नामांकन की प्रक्रिया सोमवार को समाप्त हो रही है।

NAGAR PANCHAYAT SARAGAON
DIST - JANJGIR-CHAMPA, C.G

E-Procurement Tender Notice (2nd Call)
Main Portal: https://eproc.cgstate.gov.in
UDD Portal: https://eproc.cgstate.gov.in

SYSTEM TENDER NO: 177752
NO:.../NIT/SARAGAON/PWD/2025-26 SARAGAON Dated 16.10.2025

Online bids are invited for the following works of Items up to:
Start Date and Time 16.10.2025, 17:30 (Start date & time of Bid preparation).

Name of Work/Description of Item: Providing skilled/semi skilled/unskilled labour for different type of work ie drain cleaning, road cleaning, septic tank desludging form machine, office work, fieldwork, driver etc. (collector rate) **SARAGAON**

Total Probable Amount of Contract: **Rs. 40.00 Lacs**

The details can be viewed and downloaded online directly from the Government of Chhattisgarh e-proc Portal https://eproc.cgstate.gov.in on Sub Portal of Urban Administration and development Department. https://eproc.cgstate.gov.in from (Start Time) Date 16.10.2025, 17:30 onwards.

For more details, terms & conditions on the tender and bidding process you may please visit the Office of the Chief Municipal Officer, NAGAR PANCHAYAT SARAGAON.

NOTE: -
1. All eligible/interested contractors are mandated to get enrolled on e-Proc portal. **(https://eproc.cgstate.gov.in)**

Bid Submission Start Date & Time	Bid Due Date & Time	Physical Submission of EMD/DD & Annexure 13	Bid Open Date & Time
16.10.2025, 17:30	**03.11.2025, 17:30**	**04.11.2025, 17:00**	**04.11.2025, 17:01**

CHIEF MUNICIPAL OFFICER
NAGAR PANCHAYAT SARAGAON

NAGAR PANCHAYAT SARAGAON
DIST - JANJGIR-CHAMPA, C.G

E-Procurement Tender Notice

SYSTEM TENDER NO/- 177754 NIT NO: /Dated 16/10/2025

Online tenders are invited by the CHIEF MUNICIPAL OFFICER, SARAGAON for the following work in Form "A" for Percentage Rate contract from the contractors registered with Unified Registration System (Single Window) on GoCG PWD & e-Procurement System Portal (https://eproc.cgstate.gov.in) as per the 'key Dates' mentioned below. All other conditions for submission of tenders and criteria for prequalification etc. have been mentioned in the tender documents.

Key Dates

Bid Start Date & Time	:	16/10/2025 17:30
Bid Due Date & Time	:	06/11/2025 17:30
Physical Doc Submission End Date & Time	:	07/11/2025 17:30
Bid Open Date & Time (Scheduled)	:	10/11/2025 11:00

Name of work	Probable amount of contract (Rs. in Lakh)	Earnest money (Rs. in Thousand)	Time allowed for completion	Cost of Tender Document (in Rupees)	Validity of the Bid (From the last date of bid submission)	Class of the Contractor
Construction Of Sumpwell, supplying & laying Of Pipeline & Drilling Of Borewell Work Ward No. - 01,02 & 08 of SARAGAON, Chhattisgarh	Rs 62.95 Lakh	Rs 47500.00	Construction Period – 08 months (from the date of issuing of Work Order).	5000.00 (Rupees Five Thousand only)	120 days	In Class 'D' or above registered with Unified Registration System (Single Window) on GoCG PWD

NOTE: - 1. All eligible/interested contractors are mandated to get enrolled on e-Proc portal. **(https://eproc.cgstate.gov.in)**

CHIEF MUNICIPAL OFFICER
SARAGAON

NAGAR PANCHAYAT SARAGAON
DIST - JANJGIR-CHAMPA, C.G

E-Procurement Tender Notice (2nd Call)
Main Portal: https://eproc.cgstate.gov.in
UDD Portal: https://eproc.cgstate.gov.in

SYSTEM TENDER NO: 177753
NO:.../NIT/SARAGAON/PWD/2025-26 SARAGAON Dated 16.10.2025

Online bids are invited for the following works of Items up to:
Start Date and Time 16.10.2025, 17:30 (Start date & time of Bid preparation).

Name of Work/Description of Item: Zonal Work **मरम्मत संधारण, निकाय मद, क्षतिपूर्ति एवं अन्य मद अंतर्गत रु. 1.50 लाख तक के छोटे छोटे निर्माण/मरम्मत कार्य)** CGPWD BUILDING SOR 2015, ELECTRICAL SOR 2020, ROAD/BRIDGE SOR 2025, PHE SOR 2020) at ward number 01-15 **SARAGAON**

Total Probable Amount of Contract: **Rs. 30.00 Lacs**

The details can be viewed and downloaded online directly from the Government of Chhattisgarh e-proc Portal https://eproc.cgstate.gov.in on Sub Portal of Urban Administration and development Department. https://eproc.cgstate.gov.in from (Start Time) Date 16.10.2025, 17:30 onwards.

For more details, terms & conditions on the tender and bidding process you may please visit the Office of the Chief Municipal Officer, NAGAR PANCHAYAT SARAGAON.

NOTE: -
1. All eligible/interested contractors are mandated to get enrolled on e-Proc portal. **(https://eproc.cgstate.gov.in)**

Bid Submission Start Date & Time	Bid Due Date & Time	Physical Submission of EMD/DD & Annexure 13	Bid Open Date & Time
16.10.2025, 17:30	**03.11.2025, 17:30**	**04.11.2025, 17:30**	**04.11.2025, 17:01**

CHIEF MUNICIPAL OFFICER
NAGAR PANCHAYAT SARAGAON

सभी देशवासियों को
दीपावली
की हार्दिक शुभकामनाएँ
GOVT. OF PUNJAB
“ रोशनी का पवित्र पर्व दीवाली हमें याद दिलाता है कि प्रकाश हमेशा अंधकार पर विजय प्राप्त करता है और अच्छाई हमेशा बुराई पर जीत हासिल करती है। आइए, हम सभी अपने दिलों और घरों में प्रेम, भाईचारे और खुशहाली के दीप जलाएँ। दीवाली की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ। ”
भगवंत सिंह मान
मुख्यमंत्री, पंजाब
स. भगवंत सिंह मान
मुख्यमंत्री, पंजाब
सूचना एवं लोक संपर्क विभाग, पंजाब

Hero

125M
CELEBRATING
125 MILLION CUSTOMERS

आया त्योहार हीरो पे सवार

HF Deluxe Pro | Splendor+ XTEC 2.0

शुरूआती एक्स-शोरूम कीमत
₹58 712#
पुराना एक्स-शोरूम
~~₹63 688~~
GST लाभ ₹4 976

शुरूआती एक्स-शोरूम कीमत
₹73 487#
पुराना एक्स-शोरूम
~~₹79 716~~
GST लाभ ₹6 229

सीमित अवधि ऑफर

प्रतिदिन EMI
₹59$
से शुरू

डाउन पेमेंट
₹999$
से शुरू

विशेष कॉर्पोरेट ऑफर्स
₹2 200~
तक

5 YEAR WARRANTY* *Conditions apply

Hero GoodLife
पाएं जीतने का मौका
100% कैशबैक | 24 कैरट सोने का सिक्का
और कई अन्य सुनिश्चित लाभ*

Additional offers on:
Flipkart amazon.in

Hero MotoCorp Ltd. Regd. Office: The Grand Plaza, Plot No.2, Nelson Mandela Road, Vasant Kunj Phase - II, New Delhi - 110070, India. | CIN: L35911DL1984PLC017354 | For further information, contact your nearest Hero MotoCorp authorized outlet or visit us on www.HeroMotoCorp.com. Accessories and features shown may not be a part of standard fitment. Always wear a helmet while riding a two-wheeler. ~Offer amount and combination of offer may vary for model/variant and states and it is applicable on select models only, for a limited time period or till stock lasts. $Finance offer is at the sole discretion of the Financier, subject to its respective T&Cs, Available at select dealerships. ^T&C apply, Offer available only on limited stores. *Limited period offer, T&C apply. As per cumulative dispatch numbers till August 2025. #Ex-showroom price of Splendor+ and HF Deluxe in Chhattisgarh.

TOLL FREE
1800 266 0018

अधिकृत डीलरः बिलासपुरः सत्या हीरो 9289922464, गैलेक्सी हीरो, 9289922706, अंबिकापुरः आनंद हीरो, 9289922359, सरगुजा हीरो, 9289923110, कोरबाः शांति हीरो, 9289922813, छत्तीसगढ़ हीरो, 9289923057, रायगढ़ः गोयल हीरो, 9289922373, आदित्य हीरो, 9289923091, जांजगीरः आनंद हीरो, 9289922772, बैकुंठपुरः आर.के. हीरो, 9289922812, जशपुरः आकाश हीरो, 9289922909, एसोशिएट डीलरः खड़गांवः बंसल ऑटो एजेंसी, 7000103415, चौराः ओम ऑटो एजेंसी, 7000316070, सरियाः अग्रवाल ऑटो सेण्टर, 9993121909, गौरेलाः श्री माँ नर्मदा मोटर्स, 7587796622/7587796611, सनावलः सोनी ऑटोमोबाइल्स, 9479235816, रतनपुरः माँ महामाया मोटर्स, 9754240437/8839972027, बलोदाः श्री कमला ऑटो, 9926515216, मरवाहीः राहुल ऑटोमोबाइल्स, 8889467369/8719087320, मुंगेलीः महावीर, 9993855199, मनेन्द्रगढ़ः विवेक ट्रेडर्स, 6261178785, कटघोराः श्री शारदा एंटरप्राइज, 9809809925, शिवरीनारायणः सुल्तानिया ऑटो केयर, 9407600319, सक्तीः गोयल ऑटो, 9303571001/7000490324, खरसियाः विजय ऑटो एजेंसी, 9993093829, सीतापुरः श्रीराम हीरो, 7000043001, पत्थलगांवः ज्योति ऑटो, 9406399000, सारंगढ़ः गोपाल ऑटो सेंटर, 9827893203, सूरजपुरः आशा ऑटोमोबाईल्स, 9826440096, अकलतराः श्री ऑटो, 9424174274, कोटाः उर्मिला मोटर्स, 9340252857, श्री पुष्कर मोटर्स, 6268000180/8718888789, रामानुजगंजः प्रीति ऑटोमोबाईल्स, 8827674000, बाराद्वारः दुर्गा ऑटो एजेंसी, 8319982160, उदयपुरः बंसत ऑटोमोबाईल्स, 9406022927, तपकराः प्रीति ऑटोमोबाईल्स, 7354334545/7999851514, प्रतापपुरः तायल ऑटोमोबाईल्स, 9617218005, पटनाः आयुश ऑटोमोबाईल्स, 8839141926, पालीः आनंद ऑटोमोबाईल्स, 7089519999, राजपुरः महामाया एजेंसी, 9516209272/9340726288, मदनपुरः ओम ऑटो एजेंसी, 7000316070, सीपतः मेसर्स गणेश मोटर्स, 9993194005, महापालीः साहू ऑटोमोबाईल्स, 7746028455, लखनपुर : पीएन ऑटोमोबाइल्स, 8839193005, बटौली : इक्छा ऑटोमोबाइल्स, 8770232677, कुसमीः बोल्बम ऑटो, 8120191597, विश्रामपुरः ख़ुशी ऑटोमोबाइल, 9826775718, झरगांवः ऐबानी मोटर्स, 7849000000, रामानुजनगर : जयसवाल ऑटो , 9926015773, बलंगीः नमो ऑटोमोबाइल्स, 9977876863, भैयाथानः आनंद ऑटोमोबाइल्स, 9977221111, प्रेमनगरः मानस ऑटोमोबाइल्स, 9131301594, लोरमीः महेश मोटर्स, 7974700929, खैरागढ़ः पुष्पक बिक्री, 9425554343, भानपुरीः अपराशा ऑटोमोबाइल्स, 9981009491, ऐडिशनल वर्कशॉपः अम्बिकापुरः आनंद ऑटोमोबाईल्स, देवीगंज, 7771008601/9289922359, जेन्युइन स्पेअर पार्ट्स के लिए संपर्क करें: अधिकृत स्टॉकिस्टः ओरियन ऑटोव्हील्स, 07752-252088, अधिकृत सिटी वर्कस्: उरगाः बालाजी सर्विस स्टेशन, 279600, डीलर एक्सटेंशन काउंटरः बिलासपुर (सकरी): सत्या सर्विसेज़, 9111107951, गैलेक्सी हीरो (जगमल चौक) 8085152612, चम्पाः आनंद हीरो, 7909901444, कोरबाः शांति हीरो, 7440299000, Hero Sure (Buy, Sell, Exchange Any Used Two Wheeler) बिलासपुरः सत्या हीरो, 9289922464, खड़गांवः बंसल ऑटो एजेंसी, 7000103415.

हरिभूमि कम्यूनिकेशन्स प्राईवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक प्रियंक सिंह परिहार द्वारा हरिभूमि पब्लिकेशन्स, रिंग रोड नं. 2, गौरवपथ, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)-495001 से मुद्रित एवं हरिभूमि कार्यालय, रिंग रोड नं. 2, गौरव पथ, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)-495001 से प्रकाशित। प्रधान संपादक : डॉ. हिमांशु द्विवेदी, स्थानीय संपादक: प्रवीण शुक्ला। RNI No. CHHHIN/2001/03764, फोन : 07752-401050, फैक्स : 07752-401052. e-mail : bilaspur@haribhoomi.com